

ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका



अमर ज्योति

वर्ष: 67 | अंक: 7 | जुलाई 2016

प्रकाशक :

बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक :

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह-संपादिका

श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :

'अमर ज्योति'

श्री बिश्नोई मन्दिर

हिसार - 125 001 (हरियाणा)

फोन : 8059027929

email: editor@amarjyotipatrika.com,

info@amarjyotipatrika.com

Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :

फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त
सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक सदस्यता : ₹ 100

आजीवन सदस्यता : ₹ 1000

“अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार
लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे
सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है।
लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से
सम्पर्क करें”



‘अमर ज्योति’ का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबदवाणी	3
सम्पादकीय	5
साखी	6
राजस्थान की सन्त परंपरा, गुरु जाम्भोजी.....	7
वेद और पर्यावरण	10
अहंकार	12
विज्ञापन सूचना	15
हाथे करो टबाई	14
किणनै बोलां बावला	17
बिश्नोई पंथ के भाई घनैया-रूपा राम जी	18
माँ	19
बधाई सन्देश	20
हरजस	22
बिश्नोई लोकगीत	23
ध्वनि प्रदूषण का कुप्रभाव	24
मोटापा घटाएं और स्वस्थ जीवन पाएं	25
दहेज प्रथा	26
बाल कविताएँ	27
कैरियर	28
परिश्रम सफलता की कुंजी	29
कन्या भ्रूण हत्या पाप है...	30
गिरते नैतिक मूल्य	31
सामाजिक हलचल	32

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।



“दोहा”

खड़ बाढ़ण भेला हुआ, सहजे मांग्यो नीर।
जोगी चिंत्या मति करो, म्हांसूं राखो सीर।
रूपे सब सूं यूं कह्यो, मति दुखरावो मोहि।
हम छेड़या दुख भोगस्यों, परचौं देसूं तोहि।
विश्रनोईयां का कापड़ा, रूपै दिया जलाय।
अन्द्र वन्ही उपनी, मन में नहीं समाय।
तब विश्रनोई जायके, कहि सतगुरु सों बात।
क्रोध अग्नि याकै बहु, वस्त्र फूंकैऊ तात।
तब रूपे ऐसे कह्यो, सतगुरु सेती भेव।
दुखत प्रभु मोंसो कियो, सुणिये पूरण देव।

इससे पूर्व सबद प्रसंगों में बताया था कि लोहा पांगल को विश्रनोई बनाकर रूपा नाम रख करके धरनोक गांव में प्याऊ पर पानी पिलाने के लिये भेजा था। कुछ समय के पश्चात् धरनोक गांव के निवासी तथा रूपाराम सभी लोग अमावस्या को सम्भराथल पर आये। वहां पर बैठकर जम्भदेवजी से शिकायत करते हुए कहा हे देव! आपने यह कैसा आदमी हमारे यहां रखा है। हम लोग घास काटने के लिये इकट्ठे हुए थे। इनसे पीने के लिये जल मांगा था और इससे हमने कहा भी कि पहले तो तुम महन्त थे किन्तु अब तुम्हारी महन्ताई कहां गई? कोई बात नहीं हम तुम्हारे साथ है हम लोगों से प्रेम भाव रखोगे तो तुम्हें हम कोई कष्ट नहीं होने देंगे। हे प्रभु! इसका तो अब तक क्रोध शांत नहीं हुआ है। जिसके फलस्वरूप इसने हमारे कपड़े जला दिये। यह व्यक्ति अब तक भूत-प्रेतों की सेवा करता है। यह हम लोगों को नुकसान पहुंचा सकता है।

इस शिकायत का समाधान देते हुए रूपाराम ने कहा-हे प्रभु! इन लोगों ने मुझे बहुत ही दुखी कर दिया था। ऐसे कटु वचन मुझसे सहन नहीं हो सके थे और क्रोधाग्नि ने इनके कपड़े जला दिये थे। इसमें केवल मेरा ही दोष नहीं है कुछ इनका भी तो है। इस विवाद का समाधान श्री देवजी ने सबद द्वारा इस प्रकार से किया।

सबद-55

ओ३म् रणघटिये कै खोज फिरन्ता, सुण सेवन्ता,
खोज हस्ती को पायो।

लूंकड़िये को खोज फिरन्ता, सुण सेवन्ता, खोज
सुरह को पायो।

भावार्थ - हे रूपाराम! इस जीवन से पूर्व लोहापांगल के रूप में खरगोश की खोज में घूमा करता था, उसी खोज में ही तुम्हें हाथी मिल गया है अर्थात् भूत, प्रेत, भेरू, जोगणी आदि की सेवा में ही दिन व्यतीत करता था, मैंने तुम्हें हाथी रूपी परम तत्त्व की प्राप्ति के लिये तैयार कर दिया है तथा पहले तू लोमड़ी की खोज में घूमा करता था किन्तु यहां पर आने से तुम्हें सुरह दुधारू गाय मिल गई है अर्थात् सांसारिक विषय वासनाओं में सदा भटकता था। मैंने गऊ दूध रूपी अमृत पान करवा दिया है। अब तुम्हें तृप्ति का अनुभव होना चाहिये था।

मोथड़िये के गूढ खणन्ता सुण सेवन्ता, लाधों थान
सुथानों।

रांघड़ियों को घाट घड़न्ता, सुण सेवन्ता कंचन
सोनो डायो।

तथा पूर्व में तू मोथ (एक जंगली घास है जो मरू भूमि में होती है।) की जड़ खोदा करता था तथा उसकी ही सेवा करता था। अब तुम्हें अमृतदायी फलदायी आम का वृक्ष मिल चुका है अर्थात् पूर्व अज्ञानावस्था में दूसरों की निंदा, व्यर्थ का तर्क-वितर्क वाद-विवाद द्वारा दूसरों के धर्म की जड़ खोदता था। अब तुम्हें परम तत्व रूपी उत्तम फलदायक वृक्ष बता दिया है। इसकी जड़ों को खोज, मजबूत कर तथा पानी पिला तथा रांग घड़ते हुए मैंने तुझे सोना घड़ने के लिये दिया अर्थात् पाखण्ड में ही प्रवृत्त रखने वाले को मैंने पाखण्ड, असत्यता, झूठ, कपट व्यवहार से हटाकर के सत्य स्वर्णमय दिव्य ज्योति स्वरूप परमात्मा के साथ व्यवहार सम्बन्ध स्थापित करवा दिया।

हस्ती चड़न्ता गेवर गुड़न्ता, सुणही सुणहा भूंकत कायों।

हे रूपाराम! मैंने तुझे हाथी तथा ऊँचे पर्वत पर चढ़ा दिया है। अब तू हाथी पर बैठा हुआ निर्भय विचरण कर। तुझे देख करके यदि कुत्ते-कुतिया भोंकते हैं तो भोंकने दे। तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अर्थात् मैंने तुझे वह परम ज्ञान दिया है जिससे तुम्हें सर्वोच्च पद की प्राप्ति होगी। तू ऐसा मानो कि उस पद पर बैठ ही चुका है। तेरी वृत्ति उसमें स्थिर हो चुकी है तो फिर अब सांसारिक लोग तुझे कुछ भी कहते रहे। बुरा या भला तुझे चिंता क्रोध नहीं करना चाहिये।

साभार - जम्भ सागर



मुगति भगते दातार, सेव सतगुरु की कीज।
घड़ी पहर दिन राति, नांव विसन को लीज।
पिता कुटुंब परवार, नांहि को मरतां बेली।
सगो तुंही करतार, अंति काल घड़ी उ बेली।
जदि जीव आव संकड़, न दीजौ औरा कही।
विसन भगत उदौ कह, जग तारण जपुं तही ॥



विसन दे तुठो पार, विसन वैकुण्ठ वसावा।
विसन को जपतां नांव, निगुण नर हांसो आव।
रहैस्या जागीर जाय, जित को भुत खीलाव।
रहस्य विणासै जीव, लोभ करि हत्या कमावै।
द्येह अनेक अनेक दांन, गल काटे सु करत गुंव।
विसन भगत उदो कह, वर अनंत जुण्य भौ भौ भुव ॥

सम्पादकीय



गुरु बिन मुक्त न जाई

भारतीय दर्शन में मुक्ति अर्थात् मोक्ष को मानव जीवन का चरम लक्ष्य घोषित किया गया है। मनुष्य जीवन प्राप्त करने की सार्थकता इसी में है कि हम कुछ ऐसे कार्य करें, जिससे जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाये और आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिल जाए। यदि मनुष्य तन प्राप्त करके हम यह कार्य नहीं करते तो इसका अर्थ है कि हमने विशेष कुछ भी नहीं किया क्योंकि हम जो शेष कार्य करते हैं वे तो अन्य पशु-पक्षी भी करते हैं, फिर मनुष्य जीवन प्राप्त करने का लाभ क्या हुआ? मनुष्य के पास परमात्मा का दिया हुआ 'बुद्धि' रूपी अनूठा उपहार है, जिससे वह करणीय-अकरणीय का विचार कर सकता है तथा करणीय को करते हुए मोक्ष लाभ को प्राप्त कर सकता है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि सभी मनुष्य ऐसा कर क्यों नहीं पाते? इसका कारण यह है कि मनुष्य एक भ्रमित होने वाला जीव है, वह सांसारिक मोह-माया के जाल में उलझकर अपने वास्तविक पथ से भटक जाता है और परिणामस्वरूप उसका अमूल्य जीवन व्यर्थ चला जाता है। अब फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि उसे यह वास्तविक पथ दिखायेगा कौन? इसका उत्तर है- 'गुरु'।

यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। सभी धर्म ग्रंथों, संतों व गुरुओं की वाणी में गुरु महिमा का बख़्शान किया गया है। कई स्थानों पर तो गुरु को भगवान से भी बड़ा बताया गया है। यह सब अकारण ही नहीं कहा गया है। वास्तव में गुरु का मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गुरु ही वह कुशल कारीगर होता है जो शिष्य के जीवन को संवारता है तथा भ्रम की शृंखला को तोड़कर अपने शिष्य को मोक्ष पथ पर आरूढ़ करता है। अज्ञान का पर्दा हटाकर ज्ञान का द्वार खोलने की कुंजी केवल गुरु के पास होती है। बिना इस द्वार के खुले मनुष्य पशुसम ही होता है। गुरु ही करणीय-अकरणीय का विवेक जागृत करता है। यही कारण है कि गुरु जम्भेश्वर जी ने भी 'गुरु' की महिमा का बख़्शान अपनी 'सबद्धवाणी' में अनेक स्थानों पर किया है। उनकी वेदमयी वाणी का प्रारंभ ही 'गुरु' शब्द से होता है 'गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित'। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अपनी वाणी में शताधिक बार गुरु की चर्चा की है तथा मनुष्य के जीवन में 'गुरु' के महत्व को रेखांकित किया है।

मानव जीवन में जितना आवश्यक गुरु को धारण करना है उतना ही आवश्यक है गुरु के गुणों को परखना। यदि कोई व्यक्ति गुरु के लक्षणों पर ख़रा नहीं उतरता और उसे हम गुरु धारण कर लेते हैं तो हमें लाभ के स्थान पर हानि ही प्राप्त होगी। इसलिए गुरु जाम्भोजी ने अपने प्रथम 'सबद्ध' में ही गुरु के लक्षणों की विस्तृत व्याख्या की है तथा पुरोहित के माध्यम से मनुष्य मात्र को सचेत किया है कि पहले गुरु को पहचानो और फिर धारण करो। वर्तमान परिस्थितियों में गुरु महाराज के इन वचनों का महत्व और 'गुरु बिन मुक्त न जाई' अधिक बढ़ गया है। इसके साथ-साथ हमें गुरु महाराज के इन वचनों पर भी ध्यान देना चाहिए कि बिना गुरु के मार्गदर्शन के मनुष्य को सद्पथ और मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती- 'गुरु बिन मुक्त न जाई'।

आवो मिलो साधो मोमणो, रलि करि जमूं रचाय।1।
साध सिदक मिलि जोविये, विसन विसन भणाय।2।
विसन जंपा सुख सांप जे, जम गंजण तै छुटाय।3।
जे बायो सोई लुण्यो, विन बाहया पछिताय।4।
लूणों चुणों साधो मोमणों, संभल गांठ की जायं।5।
काज संभलो बैड़े चढ़ो, भुंजल ज्यूं लंघाय।6।
भुंजल लंघे सो उबरै, पहुंचे पार गिराय।7।
पार गिराय सुख भोगवै, हरि दीदार मिलाय।8।
फूलो हलवी पाटो कूचवी, बीजल इधिक खिंवाय।9।

भावार्थ- हे साधों मोमणों! जागरण में आओ और मिलकर बैठो, सभी मिलजुल जागरण जम्मा करो। सुनो तथा दूसरों को भी सुनाओ।1। साधु एवं सिद्धजन मिलकर विचार करके देखो तथा विष्णु का जप करो और दूसरों को भी ऐसी ही प्रेरणा दो। कहा भी है- सिद्ध साधक को एक मतो। विष्णु का जप करने से ही सुख शांति आयेगी तथा यमदूतों की मार से विष्णु ही बचायेगा।3। जिसने भी ज्ञान ध्यान साधना रूपी खेती की है फल भी तो वही प्राप्त करेगा। जिसने खेती की ही नहीं तो वह क्या फल प्राप्त करेगा उसे तो केवल पछतावा ही रहेगा।4। हे साधों मोमणों! जहां पर भी ज्ञान के कण बिखरते हो वहीं से लुण-चुण करके एकत्रित करो, ज्ञान तो उत्तम ही होता है उससे परहेज मत करो, कहीं ऐसा न हो कि पास में आयी हुई ज्ञान की गांठ न खुल जाये और जो कुछ भी अर्जित किया था वह भी खिसक न जाये।5। पीछे कुछ करना अवशेष रह गया है तो अति शीघ्रता से पूर्ण कर लो और गुरुदेव ने यह नियम धर्म रूपी नौका दे रखी है इसी पर सवार होकर संसार सागर से पार उतरना है। गुरु स्वयं यहां पर खेवट उपस्थित है।6। जो भी भवसागर से पार उतर जायेगा वही तो अजर अमर हो जायेगा। उसी का ही मानव जीवन सफल है।7। वहां परमात्मा के परम धाम पहुंच जायेगा तो अनन्त सुख की प्राप्ति हो जायेगी। हरि का प्रेम वहां पर सुलभ होगा।8।

सदा ही चंचल रहने वाला मन जिसे हलवी कहा गया है। यह मन जब भी साधना द्वारा हृदय रूपी पाटे पर जाकर बैठेगा, वहां पर संकुचित हो जायेगा। चंचलता मिटाकर एकाग्र हो जायेगा तो वह हृदय में प्रफुल्लित कमल फूल पर मन रूपी भंवरा गुंजार करेगा वही गुंजार ही नाद ध्वनि के रूप में सुनायी देगी। उसे ही बादलों की गर्जना कहा गया है और

जां संतां नै नफो हुवै, जीवत जे मर जाय।10।
जीवत मरै सो उबरै, पहुंचै पार गिराय।11।
रतन काया सांचै ढली, ओ ऐह आपा पहराय।12।
रतन काया पण पहर कै, हींडोले पण वैसाय।13।
हींडोलै पण वैस कै, सहज ही सुरत लगाय।14।
छल्या कचौला अमि का, सुगुरु प्रसाद पिवाय।15।
अति प्रेम सूं विसन जपो, भृकुटि सुरत लगाय।16।
जांभजीरो सेवक बोले आलमो, इणि विधि जमोरचाय।17।

जब नाद ध्वनि की गर्जना सुनायी देगी तो दूसरे ही क्षण बिजली की चमक भी दसवें द्वार में दिखाई देगी। यही सभी कुछ जब मन की हृदय कमल में स्थिरता होगी तभी संभव है। बादल में बिजली की चमक एवं गर्जना भी बादलों की स्थिरता पर ही निर्भर करती है। कहा भी है-“हृदय नाम विष्णु को जंपो हाथे करो टवाई”“ईश्वर सर्व भूताना हृद देशे अर्जुन तिष्ठति” जीवन का लाभ तो उन्हीं संतों को होता है जो इस प्रकार की साधना करके अपने अहंकार को मिटा देते हैं। उनकी दृष्टि में सर्वत्र हरि ही हरि रह जाता है। अहं मिट जाता है।10। जो इस प्रकार की साधना करता है वही बच पाता है अन्य तो सभी डूबते हुए नजर आ रहे हैं। मोह माया से निकल नहीं पाते हैं।11। यह दिव्य काया परमात्मा ने हमें प्रदान की है। प्रत्येक शरीर की आकृति स्वभाव भिन्न-भिन्न है ऐसा अहसास होता है कि प्रत्येक काया के लिये अलग-अलग सांचे बनाये हैं उसमें सुन्दर काया ढाली गई है। उस काया को इस जीवात्मा ने पहन रखा है।12। किन्तु इस रतन सदृश अमूल्य काया को प्राप्त करके भी यदि हींडोले अर्थात् हृदय से उठी हुई आनन्द की लहरों उमंगों से परिचित न हो सके तो जीवन व्यर्थ ही चला गया। यदि उस उमंगों की लहर पर बैठ जाये तो सहज ही सुरति परमात्मा से लग जायेगी।16। अमृत के कटोरे भरे हुए हैं तथा वह भी अपने पास अति निकट ही है किन्तु उनकी प्राप्ति तो गुरु कृपा से ही हो सकेगी। सतगुरु ही युक्ति से अमृत पान करवा सकते हैं। हे साधो मोमणों! अत्यधिक प्रेम भाव से भृकुटि में ध्यान लगाकर विष्णु मंत्र का जप करो।17। जाम्भोजी का सेवक आलम कहते हैं कि इस प्रकार से जम्भा जागरण रचाओ अर्थात् सत्संगति करो जो अमृत फल देने वाली है।18।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

राजस्थान की सन्त परम्परा, गुरु जाम्भोजी और लोकमंगल की भावना

भारतीय धर्म साधनापरक साहित्य के क्षेत्र में मध्यकालीन सन्तों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सन्तों की विशाल परम्परा ने हिन्दी साहित्य और विशाल जन-मानस को जो बौद्धिक-आध्यात्मिक बहुमूल्य रत्न प्रदान किए, वे अनुपम हैं। भारतीय संस्कृति की वह आध्यात्मिक-चिंतन-परम्परा, जो वैदिक काल से निरन्तर प्रवाहमान थी, उसे युगानुरूप परिपुष्ट करने में सन्तों का विशेष योगदान रहा है। मध्यकालीन अशान्तिमय वातावरण में सन्तों द्वारा समाज में नवीन जाग्रति एवं चेतना लाने का सद्प्रयास किया गया। इन सन्तों ने अपनी वाणियों द्वारा एक ऐसी संश्लिष्ट सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसने जीवन-मूल्यों को नई गरिमा एवं महिमा प्रदान की। सन्तों ने स्वानुभूत वाणियों द्वारा जीवन के विषय में एक उदात्त दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक क्षितिज पर चौदहवीं शताब्दी में एक ज्योतिर्मय नक्षत्र का उदय हुआ और वे थे, स्वामी रामानन्द। इन्होंने अपनी क्रांतिकारी युगीन विचारधारा से उत्तर भारत की धर्म-साधनाओं और भक्तिधाराओं को नया मोड़ दिया। उन्होंने युग की आवश्यकताओं को समझ, सामाजिक हीनता और असमर्थता की भावना को समूल नष्ट कर, साधना की ऐसी भूमिका तैयार की, जो सबके लिए खुली थी। कबीर और पीपा इन्हीं स्वामी रामानन्द के शिष्य थे।

राजस्थान भी इस ज्ञान भक्ति की नई क्रांतिकारी धारा से प्रभावित हुआ। भारतीय निर्गुण संतों की शृंखला में राजस्थान के गुरु जाम्भोजी, जसनाथजी, पीपाजी, स्वामी हरिदासजी, दादू, रामचरण, चरणदास आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन सबके प्रयास से राजस्थान अनेक प्रसिद्ध सन्तों और संत सम्प्रदायों की जन्मस्थली बन गया। राजस्थान में जिन प्रमुख संत सम्प्रदायों का उदय हुआ, वे हैं- 1. बिश्नोई पंथ, 2. जसनाथी सम्प्रदाय, 3. दादूपंथ, 4. लालदासी पंथ, 5. चरणदासी पंथ, 6. रामस्नेही सम्प्रदाय, 7. हरिदासी पंथ। सन्तों के इस सामाजिक भेदभाव विहीनता तथा धार्मिक समानता के वैशिष्ट्य ने यहाँ के दलित, परिगणित एवं पिछड़ी हुई जातियों में एक नवीन आशा का संचार कर दिया। जिससे उनमें नवजागरण एवं स्वात्मबल का भाव उठने लगा और उसकी प्रतिक्रिया में यहाँ के उच्चवर्गीय

लोगों को भी अपने नियंत्रण-नियम ढीले करने पड़ गये। फलतः भारतीय समाज की सामूहिक मनोवृत्ति का झुकाव क्रमशः लोकोन्मुख हो गया।¹¹ राजस्थान के संत सम्प्रदाय न केवल राजस्थान के, अपितु सम्पूर्ण भारत के, विशेषकर उत्तर भारत के निर्गुण भक्ति आन्दोलन में प्रमुख भूमिका रखते हैं।

मध्यकालीन राजस्थान में नीची जातियों के लोग ऊँचा दिखाने की होड़ में भगवें वस्त्र पहनकर, जटा रख कर साधु सन्त बनने लगे। ऐसे समय में राजस्थानी संत सम्प्रदायों के प्रवर्तक संत-कवियों ने एक धार्मिक व सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। उनके शिष्यों एवं अनुयायियों ने इसे दूर-दूर तक फैलाया। साधारण समाज के आम आदमी की पीड़ा-व्यथा को इन संत कवियों ने समझा और जनमुक्ति के एक प्रखर स्वर का उद्घोष अपनी काव्य सर्जना में किया। तत्कालीन समाज में जो और भी विकार, विषमताएँ, विसंगतियाँ थी, उनको उजागर कर, उनके परिष्कार के उपाय भी इन संत कवियों ने बताये। प्रायः सभी सन्तों को अपने युग के सामाजिक भेदभाव, रूढ़िवाद एवं वैषम्य से जूझना पड़ा। संतों की विचारधारा तत्कालीन परिस्थितियों का समाधान एवं तत्कालीन व्यवस्था में भारतीय समाज के पुनर्व्यवस्था का प्रयत्न थी। यह विचारधारा जन-जीवन के लिए उत्पन्न हुई और उसके अग्रणी भी बहुधा जनता के ही निम्न वर्ग के समाज के प्रतिनिधि थे। समाज को एकसूत्र में बाँधने के लिए संतों ने धार्मिक भेदभाव को दूर करना आवश्यक समझा। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने धर्म सम्प्रदायगत विभिन्न संकीर्णताओं का विरोध कर, उनसे मुक्ति दिलाकर समाज को सात्विक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। गुरु जम्भेश्वर जी ने इस विषय में कहा है-

“जां जां पाल्या न सीलूं, तां तां कर्म कुचीलूं।

जां जां खोज्या न मूलूं, तां तां प्रतक्ष्य थूलूं।

जां जां भेद्या न भेदूं, तो सुरगे किसी उमेदूं।

जां जां घमंड न मंड्यौ ताकै ताव न छाथौ।”¹²

अर्थात् जो शील धर्म का पालन नहीं करता, उसके सभी कर्म अच्छे नहीं हैं। जिन्होंने सार तत्त्व प्राप्ति का प्रयत्न नहीं किया, वे स्वभाव से सारहीन और थोथे हैं। गुण विहीन

हैं। जिन्होंने ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भेदभाव को नष्ट नहीं किया अर्थात् परमसत्ता विष्णु का रहस्य नहीं जानते, वे स्वर्ग प्राप्ति की कामना कैसे कर सकते हैं? जिनमें लोकाचार, मिथ्याचार और झूठा घमंड है अर्थात् अहंकार युक्त है, जिनको भलाई-बुराई का ज्ञान नहीं है। उनका जीवन अज्ञानता में ही व्यतीत हो जायेगा।

राजस्थान के सभी संत-कवि, व्यक्ति के आचरण और सामाजिक बुराइयों के प्रति सजग और जागरुक थे। आत्मा और परलोक की साधना तो उनके दर्शन और उपदेशों का मुख्य स्वर था ही, साथ ही व इहलोक के जीवन की पवित्रता और शुद्धता को महत्व देते थे। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और पवित्र आचरण इन संतों की दृष्टि में आध्यात्मिक साधना के पथ की पहली शर्त थी। इन्होंने आत्म-सुधार पर बल दिया। राजस्थान के प्रत्येक संत सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए, एक आचार-संहिता का पालन करना अनुयायियों के लिए अनिवार्य है। ये नियम आचरण व खान-पान विषयक हैं। नशीली वस्तुओं का सेवन, मांसाहार, मद्यपान, हिंसा, पर निंदा आदि अनुयायियों के लिए वर्जित कर्म हैं। संतों का दर्शन एक अर्थ में आत्मशुद्धि व स्वस्थ समाज रचना का आंदोलन है। बिश्नोई पंथ के उनतीस नियमों को पालन करने के संबंध में कहा गया है-

“उणतीस धर्म की आखड़ी, हिरदे धरियो जोय।

जाम्भोजी कृपा करी, बहुरि जन्म न होय ॥”

जम्भेश्वर वाणी

लोक जागरण और साधारण जन के नैतिक उत्थान के लिए संत कवियों ने नैतिकता की अलख जगायी है। लोक चिन्ता ने संतों को सामाजिक सरोकार की भावना से अभिप्रेरित किया। संत समाज ने कभी जाति, धर्म अथवा सम्प्रदाय को विशेष महत्त्व नहीं दिया। इन संतों की भक्ति का क्षेत्र सबके लिए खुला था। इनमें “जाति-पांति पूछे न कोई हरि को भजे सो हरि का होई”³ की भावना थी। संत कवि सच्चे अर्थ में लोक धर्म के संस्थापक है। दादूदयाल कहते हैं कि -

“दादू हिन्दू लागे देहरै, मुसलमान मसीति

हम लागे एक अलेख सौ, सदा निरन्तर प्रीति ॥”

संतों ने समाज में व्याप्त विभिन्न आडम्बरों व कुरीतियों का विरोध करते हुए मानव को मुक्ति का सन्देश दिया है। वैदिक कर्मकाण्ड, अवतारवाद, जाति-पांति,

ऊँच-नीच का भेद, छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों का डटकर विरोध किया व इनकी निस्सारता को प्रतिपादित किया है।

“ज्यूं मूरित त्यूं ही सिल, राम बसे सब मांहि ॥”

हरिदासजी की वाणी-93

“अलख देव अंतरि वसै, क्योँ दूजी जगह जाई ॥”

(दादूवाणी-275)

मिथ्याआडम्बर के प्रति संतों ने खण्डनात्मक स्वर अनुगुंजित किए। वेद-पुराण का विवेकहीन पाठ, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, छुआछूत, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, धार्मिक अन्धविश्वास आदि असंख्य बाह्यचारों का खण्डन संतों ने किया। इसलिये संतों ने पूजा का खण्डन करते हुए निर्गुण जपने का उपदेश दिया। संत कवियों का बाह्यचारों का खण्डन भावुकता पर न टिका होकर बुद्धि की ठोस भूमि पर टिका था। हिन्दू मुस्लिम एकता की समस्या मध्यकालीन राजस्थान में विकट रूप ले रही थी। ऐसे में गुरु जम्भेश्वर हिन्दू और मुस्लिम धर्म अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं-

“हिन्दू होय कै हरि क्युं न जंय्यौ, कायं दह दिस दिल पसरायौ ?”⁵

“दिल साबत हज काबो नेड़ो, क्या उलबंग पुकारो ? सीने सरवर करो बंदगी, हक निवाज गुजारो ॥”⁶

अर्थात् मुस्लिम धर्म में व्याप्त आडम्बर को देखकर उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा है कि यदि आपका मन, वचन तथा कर्म और अन्तःकरण निर्मल और पवित्र है तो काबे के लिए हज की आवश्यकता नहीं है। दूसरे नमाज पढ़ते समय ऊँचे स्वर में पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। आपके हृदय रूपी समुद्र में प्रेम है, तो ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। उसका स्मरण करो तथा सत्संग से सीखे हुए ज्ञान के आधार पर भगवान् के नाम का स्मरण करो। शुभ कर्म करते हुए नमाज पढ़ो। अकर्म करके नमाज पढ़ने का कोई लाभ नहीं होता।

संतों ने भक्ति के दार्शनिक पक्ष को प्रधानता नहीं दी वरन् स्वानुभूति तथा सत्संग से सीखे हुए ज्ञान के आधार पर भगवान् के नाम-स्मरण की महत्ता प्रतिपादित की है। त्याग, सदाचार, मानसिक पवित्रता और अहिंसात्मक विचारधारा को ग्रहण करके उन्होंने भगवान् नाम के अजपा जाप को मुख्यता देते हुए निर्गुण की उपासना के लिए आग्रह किया है। गुरु जम्भेश्वर परमसत्ता के विषय में बतलाते हुए कहते हैं-

“जिंह के माई न पीउ। न तनि रगतू न तनि धातू, न तनि ताव न सीयौ।

सरब सिरजत मरत विवरजत, तासन मूलि ज लीणा कीयौ।
अइया लो अपरंपर वाणी, म्हे जपां न जाया जीयौ।”⁷

अर्थात् उस परमतत्त्व के न तो माता-पिता ही होते हैं और न ही उसके शरीर में रक्त है तथा शरीर में धातु, तप और शीतलता भी नहीं होते। वह परमसत्ता लौकिक और अलौकिक जगत में सभी का संरक्षण और संवर्धन करती है। वह मृत्युंजय है। वह परमतत्त्व ही आदि एवं अनादि रूप में सर्वत्र एकरूप और एक समान विद्यमान है। मैं ऐसे तत्त्व का स्मरण करता हूँ। कारण कि वह परमतत्त्व अगोचर है। संतों ने गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्ति की बात की है-

गुरु ध्यान रे ग्यांनि तोड़िक मोहा, अति खुरसांणी छीजत
लोहा पांणी, छल
तेरी खाला पखाला, सतगुरु तोड़े मन का साला। सतगुरु
होई सहज पिछानी।

किसन चिरत विणि कार्च करवै, रह्यो न रहिंसी पांणी।⁸

अर्थात् गुरु का ध्यान स्मरण करके ही ज्ञानी व्यक्ति मोह को समाप्त कर सकता है। इसलिए गुरु का ध्यान, मनन एवं सेवा करनी चाहिए। जिसके फलस्वरूप प्राणी के अनेक प्रकार के दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार लोहे में लगा हुआ जंग खुरसाणी के पत्थर से समाप्त होता है, उसी प्रकार उत्तम गुरु की संगति करने से सांसारिक मोह और माया समाप्त हो जाती है। यह शरीर पानी की भरी हुई मशक के समान है। इसलिए मन का प्रपंच और भ्रम सच्चे गुरु के स्मरण व ध्यान से ही दूर किया जा सकता है। ऐसे परम गुरु जगत में विद्यमान हैं। उनको सहज रूप में पहचान करके मानव अपने जीवन को सफल बना सकता है। संतों की सामाजिक चिन्ता के आयाम बहुत ही व्यापक रहे हैं। वेदों में जिस प्रकार ऋषि-मुनियों ने वृक्षों और वनस्पतियों की पूजा और रक्षा की बात मानव समाज के हित कही है, उसी परम्परा में संतों ने भी वृक्षों के संरक्षण की बात कही है गुरु जम्भेश्वर द्वारा प्रवर्तित बिश्नोई पंथ तो पर्यावरण रक्षा पर अत्यंत बल देता है। इस पंथ के अनुयायियों ने खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिए प्राणों की बलि तक दी है। इस सम्प्रदाय के 29 सिद्धान्तों और रामस्नेही सम्प्रदाय की आचार संहिता में भी कुछ नियम पर्यावरण संरक्षण के हैं।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि संतों ने अपनी वाणियों में विभिन्न धार्मिक मत-मतान्तरों के पारस्परिक संघर्ष एवं संकुचित मानसिकता का खण्डन करके एक समन्वयवादी

धर्म साधना की स्थापना की। उसमें साम्प्रदायिकता के स्थान पर मानवतावादी स्वर प्रमुख हैं। उसमें धर्म के ऐसे मूल तत्त्वों का प्रतिपादन किया गया है जिस पर आज का मानव भी बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के चल सकता है। भाषा भी इन्होंने साधारण जन की चुनी। काव्य रूप भी इतना सरल-सहज और जनजीवन से पूर्णतः जुड़ा रखा कि लोक को उसे ग्रहण करने में कहीं कठिनाई नहीं हुई। ‘डॉ. रामप्रसाद दाधीच प्रसाद’ का इस विषय में कथन है कि “सन्त साहित्य की सामाजिक विषय-वस्तु का यह ऐतिहासिक महत्व है कि वह जीवन की स्वीकृति का साहित्य हैं उसमें जीवन का उल्लास, क्रोध और आदेश है, एक सुखी समाज की आकांक्षा है उसमें अन्याय का सक्रिय विद्रोह करने वाले वीरों का चित्त है इस विषय वस्तु ने सुख के दिनों में जनता का मनोबल कायम रखा, जीवन में उसकी आस्था बनी रही।”⁹ गुरु जम्भेश्वर वाणी की इस सन्त साहित्य की अमूल्य थाती है।

सन्दर्भ:-

1. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, संत साहित्य के प्रेरणास्रोत, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
2. डॉ. किशनाराम बिश्नोई, जम्भवाणी मूलसंजीवनी व्याख्या, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय प्रकाशन, हिसार, हरियाणा, प्रथम संस्करण 1996, पृ. 72
3. श्यामसुन्दरदास (सं.) कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1988
4. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, दादूदयाल वाणी, भाग-1, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5. डॉ. किशनाराम बिश्नोई, जम्भवाणी मूलसंजीवनी व्याख्या, पृ. 20
6. डॉ. किशनाराम बिश्नोई, जम्भवाणी मूलसंजीवनी व्याख्या, पृ. 34
7. डॉ. किशनाराम बिश्नोई, जम्भवाणी मूलसंजीवनी व्याख्या, पृ. 16-17
8. डॉ. किशनाराम बिश्नोई, जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, पृ. 4
9. डॉ. रामप्रसाद दाधीच ‘प्रसाद’, राजस्थान के संत कवियों के दर्शन एवं उनकी लोक धार्मिकता, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

-सरिता बिश्नोई

जे. आर. एफ. (शोधकर्ता)
हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ
sarita.vishnoi20@gmail.com

वेद और पर्यावरण

गतांक से आगे....

जल, वनों के पश्चात् वायु-प्रदूषण की समस्या का संकेत एवं हल भी वैदिक मंत्रों में उल्लिखित है। वायु को शुद्ध करने का सर्वोत्तम उपाय यज्ञ है इसलिए उसे 'श्रेष्ठतमकर्म' कहा गया है। यज्ञ के धूम्र से वायु शुद्ध होती है। अग्नि में पड़कर हवि जब फैलती है तो उसके परमाणु सभी दिशाओं में फैलते हैं। व्यक्ति को ब्रह्मयज्ञ, अग्नि यज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ तथा अतिथियज्ञ करने को कहा जाता है। सोमयज्ञ, अग्निहोत्र आदि कर्म इसी दिशा में सहायक होते हैं। यज्ञों से वायु, जल, पृथ्वी सभी का प्रदूषण नष्ट होता है। शतपथ-ब्राह्मण में कहा गया है- यज्ञ से धूम्र उत्पन्न होता है, धूम्र से मेघ आते हैं, मेघ से वृष्टि होती है। अनावृष्टि के समय वृष्टियज्ञ करके वृष्टि भी करवाई जा सकती है। विश्व के कई स्थानों पर 'अग्निहोत्र' के द्वारा पर्यावरण-शुद्धि के प्रयास एवं प्रयत्न किए गए हैं। यज्ञ का आधार अग्नि है। अग्नि स्वयं ही सबको पवित्र करने वाली है। इसका उचित प्रयोग मनुष्य के लिए कल्याणकारी है। यही अग्नि तत्व मध्यम स्थान या अन्तरिक्ष में विद्युत् तथा द्यौं में सूर्य रूप में अवस्थित है। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र इसी भावना से 'अग्नि' को ही संबोधित है। अग्नि में 'स्वाहा' तथा 'इदन्न मम' आहुति डालते समय कहे गए शब्द- 'यह मैंने कहा कि 'यह मेरा नहीं है' उदात्त-भाव भरकर मनुष्य को अहं-भाव से मुक्त करते हैं तथा उसकी लोभ की प्रवृत्ति का अंत करते हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए आधुनिक युग में मनुष्य, जो अपने आपको प्रकृति का विजेता मान बैठा है- इस अहंता से छुट्टी पानी ही होगी तथा लोभ-वश जो प्रकृति के दोहन एवं शोषण की प्रवृत्ति पनपती जा रही है। उससे मुक्त होने की राह खोजनी होगी। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जथाः' त्याग की भावना के साथ भोगने का दर्शन स्वीकार कर ही सुखद पर्यावरण पाया जा सकता है।

ऋग्वेद एवं अथर्ववेद के 'अश्विनौ-सूक्तों' में पर्यावरण संतुलन के संकेत 'मधुविद्या' के रूप में उभर कर सामने आए हैं। यहां सृष्टि के कण-कण में गिरियों,

पर्वतों, गौओं, अश्वों में जल में विद्यमान 'मधु तत्व' की बात कही गई है तथा मन के भीतर के 'मधुभाव' की चर्चा भी उन्हीं के संबंध में व्याख्यायित हुई है। अश्विनौ पृथ्वी-आकाश, सूर्य-चंद्र, दिवा-रात्रि हैं। इसमें मधु का अर्थात् आनन्द का भाव प्रकृति व मनुष्य के मध्य तालमेल से पैदा होता है। संसार में सर्वत्र द्वैधीभाव है। सुख-दुःख, पाप-पुण्य, कटु-मधु को एकान्तिक मधु बनाने में मनुष्य को ही योगदान करना है। अश्विनौ-देवता एक ओर पशुओं के रक्षक हैं तो दूसरी ओर धान्य एवं कृषि की रक्षा भी करते हैं-

'धान्याय अभयं कृणुतम्' (अथर्ववेद 6-50)

'इमां कृषिमश्विनौ अभिरक्षतः'

(अथर्ववेद 10-6.12)

इसी प्रकार ऋग्वेद के मरुत्सूक्तों में भी पर्यावरण-रक्षा के सूक्त बिखरे पड़े हैं। सृष्टि के अनतिक्रमण एवं नियमन की बात मरुतों के माध्यम से कही गई है। 'अतिक्रम्य न गच्छन्ति' वास्तव में सम्पूर्ण प्रकृति तथा उसके प्रत्येक अवयव में एक नियमबद्धता है। नियम के उल्लंघन से ही अनर्थ होता है। सम्पूर्ण जीवमंडल जब सुनियमित होता है तभी 'मरुत्' समय पर वर्षा करते हैं-'वपन्ति मरुतो निहम्' (ऋग्वेद 8-7.4) तथा धरा को मधु से सींचते हैं। एक ओर सूक्त में कहा गया है कि हमें पृथ्वी से, समुद्र से, पर्वतों से उतना ही ग्रहण करना चाहिए जितना आवश्यक हो (ऋग्वेद 6-48.22)। 'मण्डूकसूक्त' में इसलिए आकुलता के साथ संवत्सर-चक्र के पुनरावर्तन की प्रतीक्षा दर्ज है और इस संवत्सर चक्र में सूर्य, चंद्र, वायु, मेघ, अग्नि, वृक्ष वनस्पति जितने उपयोगी हैं, उतनी ही उपयोगी है नहीं घास, जिसे हम पैरों से कुचलते हैं। वैदिक ऋषि ने 'आप्रीसूक्त' में इसलिए वनस्पति, अग्नि आदि वैदिक संस्कृति ही दे सकती हैं। इसलिए यज्ञ-वेदी पर तो बर्हि बिछाई ही जाती थी। 'कुश-आसन' का प्रयोग पुरोहितों के द्वारा किया जाता था। कई संस्कारों में भी कुश का प्रयोग आवश्यक था।

पर्यावरण प्रदूषण के अनेकों कारणों में से एक है-जनसंख्या वृद्धि। इसका परिसीमन करने के लिए भी निर्देश संकेतरूप में यहां हमें मिलता है- 'बहुप्रजः निर्ऋतिमाविवेश', बहुत संतान वाला दुख पाता है। समष्टि का संतुलन व्यष्टिगत संतुलन पर आधारित है। सृष्टि एवं प्रकृति के सौन्दर्य की रक्षा करने वाली वैदिक संस्कृति मनुष्य को अपने घर के परिवेश को भी सुंदर रखने की प्रेरणा देती है। 'वास्तोष्पति सूक्तों' में घर के चारों ओर सुंदर वातावरण की बात यूं कही गई है-

आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणी

उत्सो वा तत्र जायतां हृदां वा पुण्डरीकवान्

(अथर्ववेद 4-106.1)

'तेरे घर के आगे और पीछे फूलों से युक्त दूर्वाघास उगे और वहां एक हौद और कमलों वाला तालाब हो।'

सुन्दर वातावरण, सुन्दर परिवेश मनुष्य के मन को स्वस्थ एवं शांत रखता है। बाहरी पर्यावरण के साथ-साथ आन्तरिक जगत को भी निर्मल बनाने की प्रेरणा वैदिक साहित्य में दी गई है। यदि व्यक्ति का मन अशांत है, घृणा-द्वेष आदि दुर्भावनाओं से युक्त है, तो उसका प्रभाव बाह्य परिवेश पर भी पड़ता है। इसलिए वैदिक ऋषि ने प्रार्थना की 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' - मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो। इस संदर्भ में वैदिक साहित्य में प्राप्त 'स्वस्तिवाचन' एवं 'शांति-पाठ' का महत्त्व भी स्वयं सिद्ध है। सब देवताओं से सबके मङ्गल की कामना एवं प्रार्थना सृष्टि में, पर्यावरण में सर्वत्र 'शुभ' का संचार करती है। द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधि, वनस्पति सब शांत हों, यह कामना एक ओर तो मनुष्य को कोलाहल-प्रदूषण से बचने की प्रेरणा देती है तो दूसरी ओर समष्टि के प्रत्येक अङ्ग में संतुलन ही मानव के लिए कल्याणकारी है। इस सूत्र को प्रतिष्ठापित करती है। ध्वनि-प्रदूषण का अचूक उपाय तो मौन ही बताया गया है। मौन से शक्ति का संचय होता है तथा अनावश्यक बोलने के दुष्परिणामों से भी बचाव होता है। बोलना ही हो तो मीठा बोलो - 'वाचा वदामि मधुमत्' (अथर्ववेद 1-343)। मीठे वचन और वैदिक ऋचाओं के सस्वर पाठ वातावरण को शांत-मधुर बनाते हैं। संगीत के इस विशिष्ट प्रभाव को आधुनिक युग में भी मान्यता मिली है।

सृष्टि एवं पर्यावरण के अस्तित्व के लिए आज एक और बड़ा संकट उपस्थित हो गया है। 'परमाणु ऊर्जा' के रूप में। परमाणु बमों के विस्फोटों से जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहरों पर हुए दुष्प्रभावों से हम परिचित ही हैं। 'परमाणु ऊर्जा' के शांतिमय उपयोगों पर भी आज प्रश्नचिह्न लग गया है, क्योंकि परमाणु-विखण्डन क्रियाओं से पैदा हुए रेडियोधर्मी विकिरणों में एल्फा, बीटा, गामा किरण तथा न्यूट्रॉन होते हैं। इन विकिरणों से मनुष्य दैहिक रूप से और आनुवंशिक रूप से प्रभावित होता है। त्वचा-कैंसर, शारीरिक-विकलांगता जैसे रोगों के लिए ये विकिरण ही उत्तरदायी हैं। इंग्लैण्ड के कवि लुई मैकनीस की एक कविता 'अजन्मे शिशु की प्रार्थना' में अजन्मा शिशु कहता है कि ऐसी प्रदूषित पृथ्वी पर जहां विकलांग होकर मुझे जीना पड़े, मैं जन्म नहीं लेना चाहता। अच्छा है मेरा गला दबा दो, धरती पर लाने से पहले।' परमाणु ऊर्जा के संकट से बचने में भी वैदिक संस्कृति ही हमारी सहायता करती है। वैदिक विज्ञान जहां पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्यौ के पदार्थों के रहस्यों को जानने की बात करता है, वहीं एक 'परमतत्त्व' की बात भी करता है, जो कठोपनिषद् (2.20) के अनुसार अणु से अणु अर्थात् परमाणु स्वरूप तथा बड़े से बड़ा अर्थात् आकाशस्वरूप है। परमाणु की विशिष्टता को उपनिषद् के तत्त्वज्ञानियों ने भी समझा और भौतिकवादी वैज्ञानिकों ने भी। परन्तु दोनों के चिंतन में जो विशाल अंतर था वह आज मानवता के सम्मुख स्पष्ट है। अणु से अणु (परमाणु स्वरूप) परमात्मा का आत्मा से साक्षात्कार कर मानव परमानन्द की अवस्था को प्राप्त होता है तो दूसरी परमाणु-अस्तित्व को ही संकट पैदा हो गया है। सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ एवं विवेकशील प्राणी के रूप में मनुष्य के सामने आज एक बड़ी चुनौती है- पर्यावरण को संरक्षित करने की। इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़े मनुष्य को ही यह फ़ैसला करना है कि वह वैदिक संस्कृति में काम्य कम से कम सौ वर्ष का सुंदर, स्वस्थ एवं निरोग जीवन पाने का वरदान आने वाली पीढ़ी को देना चाहता है अथवा उसकी भ्रूण-हत्या का भागी बनता है।

- उषा जैन
सहारनपुर

अहंकार

वेदान्त के अनुसार अहंकार अंतःकरण की स्वार्थपूर्ण और बुरी वृत्ति है। इससे मनुष्य समझता है कि मैं कुछ हूँ या कुछ करता हूँ। उसमें मैं (मैंपन) और मेरा (मेरापन) का भाव रहता है। सामान्य व्यवहार में इसके लिए प्रायः गर्व, अभिमान, घमण्ड इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। योगदर्शन में उसे अस्मिता कहा गया है, जो पांच क्लेशों में एक है (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश- मृत्यु रूपी क्लेश या मरण भय रूपी दुःख)। ये पांचों ही जीव मात्र को संसार चक्र में घुमाने वाले महादुःखदायक हैं।

अस्मिता का तात्पर्य है- मन का यह भाव या मनोवृत्ति कि मेरी एक पृथक् और विशिष्ट सत्ता है। आत्मा ही ईश्वर और जीवन स्वरूप है। वही शरीर में अहंभाव जाग्रत कर लेता है। (मैं शरीर हूँ, ऐसा मानने लगता है), यही बंधन है। शरीर के प्रति इस अहंभाव से मुक्त हो जाना मोक्ष है। इस अहंभाव की जन्मदात्री अविद्या है, जिसके द्वारा अहंभाव समाप्त हो जाए, वही विद्या है। अविद्या और अज्ञान एक ही हैं। ज्ञान से ही अहंकार को नष्ट किया जा सकता है। अहंकार समस्त विपत्तियों के आगमन का हेतु है। इसी से मनोविचार उत्पन्न होते हैं और तरह-तरह की इच्छा आकांक्षाओं का प्रादुर्भाव होता है। इस कारण मनुष्य का अहंकार से बढ़कर कोई शत्रु नहीं है। अहंकार शून्य हो जाना जीवन की सार्थकता है। अहंकार से मुक्त हुआ पुरुष आत्मस्वरूप को प्राप्त करता है, वह चन्द्रमा के समान विमल होकर पूर्ण सदानंद और स्वप्रकाश बनता है।

पंचभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) और तंमात्राओं (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) को भूत कहा जाता है। इनका समुच्चय ही शरीर है, इस कारण इस शरीर को भूतात्मा कहा जाता है। जब आत्मा व्यग्र एवं अभिमानी होकर अहंकार मुक्त हो जाता है। उसके अंदर यह भाव आने लगता है कि 'यह मैं हूँ, यह मेरा घर है', जब वह भूतात्मा जीवात्मा के नाम से जाना जाता है। अहंकार के कारण ही जीवात्मा अपने को कर्ता-भोक्ता मानकर कर्म बंधन में बंधती है। गुरु जाम्भोजी ने कई प्रकार से अहंकार का उल्लेख करते हुए

अपनी सबदवाणी में उसके त्याग के उपाय भी बताए हैं। इनका सारांश है कि - 1. शरीर जीव, 2. जीवन, 3. उद्देश्य का भलीभांति वास्तविक ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि वस्तुतः मन, वाणी, प्राण शरीर अहंकार के ही कार्य हैं। मननशील पुरुष देहाभिमान का, अहंकार को मूलोच्छेद करके पृथ्वी पर निर्द्वन्द्व होकर विचरता है। (श्रीमद्भागवत 11/28/ 17)। शरीर से अपनी पृथक्ता का बोध होने पर अहंकार-शून्यता आती है। इसके साथ ही भगवान विष्णु को सबकी आत्मा जाननी चाहिए। यही वास्तविक स्थिति है। कोई भी मनुष्य अपनी आत्मा के साथ द्वेष कैसे कर सकता है? ऐसी स्थिति में कोई कैसे और किसका अहंकार कर सकता है? आगे उनके कुछ अहंकार विषयक वचनों का उल्लेख किया जाता है:-

1. अरथ न गरथ न ग्रबहुता (3/16)

(सृष्टि की आदि के पूर्व) धन-सम्पत्ति (और तदजन्य) अहंकार कुछ भी नहीं थे।

2. अई अमाणो तंत समांगो (15/7)

अरे! जो अहंकार रहित होता है, वही आत्मा-तत्त्व में पैठ सकता है, आत्मा को जान सकता है।

3. जां जां घमंड स मंड्यौ ताके ताव न छायाँ

(18/15-16)

जिन पर घमंड छाया हुआ है (जो अहंकार से अभिभूत है) उनको भले-बुरे का ज्ञान नहीं होता।

4. राज न भूलीलो राजिंदर दुंनी न बंधे मेरू (23/1)

हे राजेन्द्र! राज्य के अहंकार में मत भूलो, अपने अहंकार से दुनिया में मत बंधो।

5. जांजा वादविवादी, अति अहंकारी लबधि सवादी

(30/8)

जो लोग वाद-विवादी हैं, अति अहंकारी हैं, लुब्ध और स्वादी हैं।

6. वादीलो अहंकारी लो, ते भार घणां ले मरणां

(51/22-23)

हठी और अहंकारी होते हैं, वे पापों का भारी बोझ लेकर मरेंगे।

7. मेर परै सो जोयण बिंबा लोयण (52/8)

अहंकार, मैपन-अर्थात् अहंकार से (सर्वथा) परे होकर (उसके त्यागने पर) सबमें (सब जगत में) आत्म स्वरूप का दर्शन होता है।

8. तउवा मांण दरजोधन मांण्यां, अवर भी मांणंत मांणौं (56/1-2)

अहंकार तो दूसरे भी करते हैं, किंतु दुर्योधन के समान (अहंकार) किसी ने नहीं किया।

9. म्हेपणि म्हेई श्रे पणि श्रेई (63/26)

(हे लोगों) मैं तो स्वस्वरूप में स्थित में स्थित हूँ (किंतु) तुम लोग अपने अहंकार में भूले हुए हो (इसलिए) सत्पुरुषों के लक्षण और गुण ग्रहण करो।

10. तेऊ पारि पहूँता नांही, से कीयौ आपो भरणौं

(56/15-16)

वे लोग भी संसार-सागर से पार नहीं हो सके (क्योंकि) उन्होंने (अपनी-अपनी सत्ता और शक्ति का) अहंकार किया था।

11. उजाज गुमाज पंच गंज थारी (64/1)

उन्माद, अहंकार और पंचेन्द्रियों की विषय-वासनाओं से दूर रहे। इनकी आसक्ति छोड़ दे।

12. जां जा सैतांन करै उफारौ तां ता महत क फलियौ

(64/7), (87/37)

जब-जब (ऐसे) दुष्ट लोग अहंकार करते हैं, दुष्टकर्म करते हैं तथा साधु (सज्जन) पुरुषों को दुःख देते हैं, तब-तब महान आत्माओं का प्रादुर्भाव होता है।

13. माया जाल ले जंग काले, लैणां कवण स मांणौ

(66/2)

यह मायाजाल नष्ट हो जाएगा (फिर सांसारिक) वस्तुओं की प्राप्ति का अहंकार कैसा ?

13. भरमी भोगी अति अहंकारी करता गरब गुमांनौ।

तेऊ तो जंम काले खीणां, थिरि न लाधौ थांणो।
काचै पिंड अगाज उफारौ, किसौ पिरांणीं मांणौ।

(66/9-11)

(और भी अनेक इस प्रकार) भ्रम में पड़े हुए, सांसारिक भोगों में लिप्त, बड़ा अहंकार तथा गर्व-गुमान करके वाले लोग, मृत्यु के आगे नष्ट हो गए हैं, उनका कहीं ठौर-ठिकाना

भी नहीं मिलता। हे प्राणी! नश्वर शरीर से अहंकार के वशीभूत होकर तू कुकर्म करता है, यह तेरा अभिमान कैसा ?

15. जंवर तणा जंमदूत दहैला, मलि बैसैला मांणौ।

(66/29)

पाप और अहंकार (तुझे) ले डूबेंगे, रामदूतों से तू भयातुर होगा।

16. जे नर दावौ छोड्यो मेर चुकाई, राह तेतीसां की जांणी। (72/17,18)

जिस मनुष्य ने 'मेरापन' (दावो) और 'मैंपन' (अहंकार) का सर्वथा त्याग कर दिया है, उसने वस्तुतः मोक्षमार्ग को जान लिया है।

17. दीन गुमान करैलो खाली, ज्यौं कंण घात घुंण हांणी। (72/7,8)

जैसे घुन (कीट) आनाज के दानों को थोथा कर देता है, वैसे ही मनुष्य को मजहब और धर्म का गुमान थोथा कर देता है, निस्सार बना देता है।

18. करड़ा दुख दोजकि खवारूं। (1/4)

अहंकारी पुरुष (अज्ञान और भ्रम के कारण) दुःखी और दुर्दशाग्रस्त होते हुए नरक में जाएंगे।

19. सीत सरीखी तथा न देखूं, गरब न करियौ काई।

(83/10)

सीता के समान कोई स्त्री (पत्नी) नहीं देखी, जिसने अपना पति-धर्म निबाहने के लिए जीवन भर कष्ट झेले। कोई स्त्री उस बात का अहंकार करे।

20. भरमी वादी अति अहंकारी लबधि सवादी,

लावतिया रा पसुवां पड्य़ा चिरांती। (86/5-6)

(इस प्रकार लोग) भ्रम में, वाद-विवाद में, बहुत अहंकार के तथा (सांसारिक) भोगों में लुब्ध हैं। वे लोग 'लाव' में जुते हुए पशुओं के भांति भ्रम में पड़े हुए हैं।

21. पसू मुकरूं लहै न फेरूं कहै ज मेरु,

सभ जुग करु।, सांचै सूरहै करै घणेरूं,

रिणछाणै ज्यौं वीखरि जैला ताथै मेर न तेरु।

(86/21-23)

मुक्त हुआ पशु भी फिर बंधन में नहीं आना चाहता (फिर तू तो मनुष्य हो कर) जगत के बंधनों में बंधना चाहता

है। सब जग को अपना बनाना चाहते हैं, सत्कार्यों या सत्य-वादिता से दूर रहता है किंतु अधिकाधिक (सांसारिक वैभव-प्राप्ति की) इच्छा करता है। जंगल में पड़े हुए उपले के सामन तू बिखर कर नष्ट हो जाएगा, इसलिए (यहां कोई वस्तु किसी की भी नहीं है), न मेरी है, न तेरी है अथवा तेरी-मेरी व्यर्थ है।

22. छाड़ौ मन हठ मन को भांवौ। (106/2)

मनहठ और अहंकार छोड़ दे।

23. तजिया मानं अभिवांनुं। (106/4)

जिसने मान-भावना और अहंकार को त्याग दिया।

24. अवधू अजरा जारिले। (123/1)

हे अवधूत! 'अजरी' को (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (अहंकार) और मत्सर-द्वेष भाव और ईर्ष्यापूर्ण मानसिक स्थिति - ये छह 'अजरा' है वश में करो।

25. इनके अतिरिक्त ऊंनय (27/19), अंनवै (91/9), ताणौ (66/19), करड़ा (18/4) इत्यादि शब्द भी अहंकार का भाव घोषित करते हैं। वाद-विवाद, अहंकार, मोह, दुविधा वृत्ति तथा व्यर्थ, सारहीन कामों में लगे रहना अमूल्य

समय ही बर्बादी है। इन पांचों का त्याग करना चाहिए। तात्पर्य है कि आत्मा-परमात्मा की उपासना में अंतःकरण की इन वृत्तियों को वश में रखना नितान्त आवश्यक है।

इन मनोविकारों में अहंकार की सत्ता भी बनी रहती है। वस्तुतः अहंकार एक प्रमुख तत्त्व है जिसके सहारे चित्त, राग, द्वेष आदि मनोविकारों का रूप धारण करता है। अन्य मनोविकारों से स्वतंत्रा भी अहंकार की सत्ता-लोक में देखने में आती है। यह अहंकार तत्त्व द्रष्टा को अपने स्वरूप से हटाने वाला प्रथम तत्त्व कहा जा सकता है। इस तत्त्व में क्रमिक वृद्धि होने पर द्रष्टा भी अपने मूल स्थान से क्रमशः च्युत होता जाता है। इसी लिए भी जाम्भोजी ने अहंकार को त्याज्य बताया है -

“तेऊ पारि पहूँता नाहीं से कीयौ आपो भाणौ।”

(56/15-16)

-डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

(श्री जाम्भोजी और जम्भवाणी मीमांसा)

संकलनकर्ता-

कनल (से.नि.) राय साहब कडुवासरा,

पुणे (महाराष्ट्र) मो. : 9922752929

लेखकों से अनुरोध है कि.....

- ❖ अमर ज्योति के जन्माष्टमी विशेषांक हेतु अपना लेख 25 जुलाई, 2016 से पहले अमर ज्योति कार्यालय में भेजने की कृपा करें।
- ❖ जांभाणी सिद्धान्तों व विचारधारा का प्रसार-प्रचार ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है। लेखक अधिकाधिक इसी उद्देश्य के आलोक में लिखकर भेजें।
- ❖ अपने लेखों में जंभवाणी के उद्धरण देते समय उसका मूल से मिलान अवश्य करें व कोष्ठक () में सबद क्रम संख्या भी लिखें।
- ❖ विभिन्न संदर्भ ग्रंथों के उद्धरण देते समय भी कोष्ठक () में उनका संदर्भ लिखें।
- ❖ विशेषांक हेतु भेजे जाने वाला लेख 1500 शब्दों (अमर ज्योति के तीन पृष्ठों) से अधिक न हो।
- ❖ विभिन्न जांभाणी मेलों, उत्सवों व सामाजिक गतिविधियों का विवरण भेजते समय ध्यान रखें कि आपकी सामग्री 10 तारीख तक पत्रिका कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए, क्योंकि पत्रिका 15 तारीख तक मुद्रण हेतु भेज दी जाती है।
- ❖ लेख टाइप करके भेजें तो अधिक अच्छा होगा, अन्यथा बाईं ओर दो इंच का हाशिया छोड़कर साफ सुथरा लिखकर भेजें।
- ❖ लेख के साथ मौलिकता का प्रमाण-पत्र भेजना अनिवार्य है।
- ❖ लेख फॉन्ट AAText, Karuti Dev, Devnagri में टाइप करके ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। पत्रिका का ई-मेल पता है- editor@amarjyotipatrika.com,
- ❖ लेखक लेख के साथ अपना पूरा पता, दूरभाष नं., यदि हो तो ई-मेल पता भी आवश्यक रूप से लिखें।

-सम्पादक

जन्माष्टमी विशेषांक के लिए विज्ञापन हेतु सूचना

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति के लाखों पाठकों की हार्दिक इच्छा व न्यायोचित मांग का सम्मान करते हुए अमर ज्योति का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह भव्य विशेषांक गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) के उपलक्ष में प्रकाशित होगा, जो अगस्त-सितम्बर, 2016 का संयुक्त अंक होगा। सामाजिक, पर्यावरण व आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी समाज की अति लोकप्रिय व विख्यात पत्रिका अमर ज्योति की प्रसार संख्या आठ हजार से भी अधिक है व पाठकों की संख्या एक लाख के लगभग है। अपनी निष्पक्षता, उपयोगिता व स्तरीय प्रकाशन सामग्री व रूचिकर आवरण के कारण इस पत्रिका ने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश सहित पूरे भारत में ही नहीं अपितु नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों के पाठकों के हृदय में भी अपना आदरणीय स्थान बनाया है। आपको ज्ञात ही है कि इस पत्रिका का जब भी विशेषांक प्रकाशित होता है तो वह अपनी ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ अपने मनभावन व सचित्र आवरण के कारण पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बनता है। आज व्यवसाय व महंगाई के युग में भी बिश्नोई सभा, हिसार इस पत्रिका को समाज हितार्थ लागत से भी कम मूल्य में प्रकाशित कर रही है। इसके विशेषांक के प्रकाशन का श्रेय सदैव से ही आप जैसे विज्ञापनदाताओं को रहा है। आगामी विशेषांक में भी अमर ज्योति ने कुछ पृष्ठ विज्ञापन हेतु सुरक्षित करके विज्ञापन दाताओं को एक सुनहरा अवसर दिया है, जिसका सदुपयोग करके वे लाखों पाठकों के हृदय में अपनी गहरी पैठ बना सकते हैं। पत्रिका ने इस वर्ष विज्ञापन दाताओं की पुरजोर मांग का समर्थन करते हुए विज्ञापन रंगीन पृष्ठों पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। निःसंदेह इससे विशेषांक की भव्यता को चार चांद लगेंगे। अतः जो समाजसेवी, उद्यमी व व्यवसायी बंधु अपनी इस चहेती पत्रिका को विज्ञापन के माध्यम से सहयोग देना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपना विज्ञापन व निर्धारित धन राशि 25 जुलाई, 2016 तक अमर ज्योति कार्यालय, बिश्नोई मंदिर हिसार में भेज दें। आपके सूचनार्थ-

- ❖ विज्ञापन के पृष्ठ सीमित हैं, इसलिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर ही विज्ञापन स्वीकृत किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन केवल पत्रिका के अंदर के पृष्ठों में ही प्रकाशित होंगे।
- ❖ बिश्नोई धर्म व जांभाणी विचारधारा के प्रतिकूल विज्ञापन स्वीकृत नहीं किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन की निर्धारित धनराशि का ड्राफ्ट अमर ज्योति, हिसार के नाम भेजें या सीधे हमारे ऐक्सिस बैंक, हिसार के खाता संख्या 260010100035352 (खाता धारक- बिश्नोई सभा, हिसार), IFSC - UTIB0000260 में जमा करवाकर उसकी रसीद हमें भेज सकते हैं।
- ❖ हो सके तो विज्ञापन सामग्री सी.डी. में या e-mail से भेजें। e-mail का पता है- editor@amarjyotipatrika.com
- ❖ अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- मो. : 9541989777, 9541689777

विज्ञापन दरें:- (अन्दर के पृष्ठ)

पूरा पृष्ठ	10,000 रुपये
आधा पृष्ठ	6000 रुपये
चौथाई पृष्ठ	3500 रुपये

अमर ज्योति का यांत्रिक विवरण
मुद्रित पृष्ठ का आकार 7¼"×9", कॉलम 2

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

संपादक, अमर ज्योति
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार
मो. : 98121-08255

आपके शुभाकांक्षी :

प्रदीप बैनीवाल

प्रकाशक व मुद्रक, अमर ज्योति
प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार
मो. : 94160-42101

हाथे करो टबाई

बहुधा यह देखने में आता है कि लोग आराम तलबी को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं और उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए जीवन भर सतत प्रयास करते रहते हैं। उनकी दृष्टि में बिना हाथ-पैर हिलाये जीवन निर्वाह करना ही सुख है। इसलिए लोग परिश्रम की बजाय आराम को ज्यादा पसन्द करते हैं।

वैसे ऊपरी तौर से देखने पर हमें बिना श्रम जीवन जीना सुखद जान पड़ता है परन्तु वास्तव में अकर्मण्य जीवन जीना मात्र आर्थिक ही नहीं अपितु शारीरिक, धार्मिक एवं नैतिक दृष्टि से भी उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि परिश्रम मनुष्य के शरीर की प्रकृति से इस प्रकार जुड़ा प्रश्न है जिसके बिना जीवन की मूल भूत आवश्यकताओं की पूर्ति तक संभव नहीं है।

इसके बावजूद संसार का सर्वाधिक बुद्धिमान कहा जाने वाला मनुष्य इस यथार्थ सच्चाई से मुँह मोड़ रहा है। बिना मेहनत सुखी जीवन जीने की प्रत्याशा में वह अकर्मण्यावस्था को ही सुख मान बैठा है। अधिकांश लोगों की आलसी वृत्ति और पुरुषार्थ हीन जीवनचर्या के परिणाम स्वरूप ही आज देश में बेरोजगारी अशांति व अपराध बढ़ रहे हैं। इसी प्रवृत्ति के कारण समाज में कटुता एवं वैमनस्य का वातावरण बन रहा है। क्योंकि हम लोगों की सेवा करने की बजाय अन्यो से अपनी सेवा करवाने में ज्यादा रूचि रखते हैं। इस प्रकार अधिकांश लोगों में स्वार्थीभाव पनपने से देश के विकास की प्रक्रिया अवरूद्ध हो रही है।

बिना मेहनत किये सुख पाने की लालसा में व्यक्ति मात्र अपने स्वार्थ साधने की चाह तक ही सिमट कर रह गया है। अब उसने निःस्वार्थ भाव से अपने देश व समाज के प्रति अपने कर्तव्य को सही ढंग से निभाना छोड़ दिया है। यही कारण है कि विपुल प्राकृतिक संसाधनों एवं विकास की अपार संभावनाओं के बावजूद आलसी प्रवृत्ति हावी होने के कारण हमारा देश अपेक्षित उन्नति

नहीं कर पा रहा है। अन्य राष्ट्रों की तुलना में लगातार पिछड़ रहा है। जबकि परिश्रम को प्रमुखता देने वाले पश्चिमी राष्ट्र कम प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद आज कहाँ से कहाँ पहुँच गए हैं।

परिश्रम के बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं पाई जा सकती, यहाँ तक की बिना ढंग से काम किये तो ठीक से हमारे जीवन का निर्वाह तक होना मुश्किल है। प्रायः यह देखने में आता है कि जो लोग परिश्रम पूर्वक अपने कार्य क्षेत्र में मन लगा कर श्रमनिष्ठा से काम करते हैं वे घर-परिवार, समाज व देश में सर्वत्र प्रशंसा पाते हैं और वे अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ व सुखी जीवन जीते हैं। जीवन में अधिक उन्नति करते हैं।

जबकि आलसी प्रवृत्ति के लोग बीमारी व हताशा से घिरे हुए दुःखदायी जीवन जीते हैं। वे सुख-दुःख पाते हैं और अन्यो को भी तकलीफ देते हैं। अतः ऐसे असफल लोगों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है।

**काम नहीं बातां करे,
बो धरती पर भार,
काम करे बातां तजै,
इस मिनख दो च्यार।**

(जैन मुनि श्री बुद्धमल)

शारीरिक श्रम के नियम का व्यव्यथित ढंग से पालन के कारण स्वच्छन्द ढंग से विचरने वाले प्रकृति के सभी जीव जन्तु प्रायः आजीवन निरोग रहते हैं परन्तु श्रम के प्राकृतिक नियम की अवहेलना से आज मनुष्य अनेक घातक दुःखदायी बिमारियों का दंश झेलने हेतु विवश है।

शास्त्रों का मत है कि हाथ से काम किये बगैर हाथ शोभा नहीं देते और विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर पैर की हमें सफलता की अभिष्ट मंजिल तक पहुँचा सकते हैं। अतः हाथ-पाँव को अधिकाधिक गतिशील रख कर ही जीवन में वाञ्छित सफलता पाई जा सकती है।

महापुरुषों ने आलस्य को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया है फिर भी आलसी लोग अकर्मण्य होकर अपने आपको भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं। परन्तु ऐसा सोचते समय वे भूल जाते हैं कि बिना पुरुषार्थ के भाग्य की रेखा भी नहीं बनती। मनुष्य जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति बिना मेहनत के संभव ही नहीं होती, भगवान भी पुरुषार्थी की ही सहायता करते हैं।

इसलिए निकम्मेपन से न तो जीवन सुख से जीया जा सकता और न ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इसलिए गुरु महाराज ने हाथ से काम करने पर ज्यादा जोर दिया है। स्वयं उन्हीं के शब्दों में -

“हिरदे नाम विष्णु को जंपो हाथे करो टबाई”

(शब्दवाणी)

हमारे शरीर का स्वास्थ्य भी परिश्रम से जुड़ा हुआ

है, क्योंकि भगवान ने स्वस्थ जीवन हेतु परिश्रम की शर्त जोड़ दी अतः अगर हमें निरोग रहना है तो मेहनत तो (शारीरिक-श्रम) करना ही पड़ेगा।

आयुर्वेद के प्रणेता महर्षि चरक कहते हैं - “धर्मार्थ काम मोक्षणामारोग्य - मुत्तमम्।” अर्थात् अगर आप को जीवन में इन चार पुरुषार्थों को पाना है तो इसके लिए आपको स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है और स्वस्थ तभी रहा जा सकता है जब हम शारीरिक-श्रम को अपने जीवन में उतारेंगे। इस प्रकार मनुष्य जीवन की सफलता परिश्रम से जुड़ी हुई है।

- रामकिशन डेलू

पुत्र श्री रामनारायण

नजदीक कृषि उपज मण्डी, जेल रोड, नोखा मण्डी

बीकानेर (राज.)

मो. 9414547458

किणनै बोलां बावला

रूख लगाय राख्या कोनी।

मीठा फल भी चाख्या कोनी ॥

स्वास्थ्य री ले हाथ कुल्हाड़ी, काटण हुआ उतावला।

बौलो, किणरा काम सरावां, किरण ने बोलां बावला ॥

ज्युँ-ज्युँ रूख कट्या मगँरा सुँ,

मिनख घणा की जड़ कटगी।

पैलां मन में बर्णी दीवारां,

धरती टुकड़ा में बैटगी ॥

हेत रेत रँ पीदें दबग्यों,

खेत बलग्या बस्ती में।

वन री ठौर मिला री चिमन्या,

धुँओं उगल री मस्ती में ॥

कटगई खेजड़ी, नीम, बड़, पीपल, केर, टीमरू।

बौला, किणरा काम सरावां, किण ने बोला बावला ॥

गजब गंदगी घुलवा लागी।

इमरत जेणा पाणी में ॥

सुख रो सागर सूखो निकलयौ,

सपना बिक्या उधारी में।

खुशबू ही आशा में उगी,

बदबू केसर क्यारी में ॥

मानसरोवर पूग्या बगुला, तन उजला मन सा साँवला।

बौला, किणरा काम सरावां, किणने बोला बावला ॥

राधा, पत्नी रोहिताश जी भादू

रोहिड़वाली सुथारान

श्रीगंगानगर

बिश्नोई पंथ के भाई घनैया-रूपा राम जी

इन दिनों मैं बिश्नोई पंथ के पवित्र ग्रंथ जाम्भा पुराण का अध्ययन कर रहा हूँ। इस पवित्र ग्रंथ में गुरु जाम्भोजी का अनेक प्राणियों की जीवन शैली को सुधारने हेतु उपदेश का विवरण है। ऐसा ही एक प्रसंग पृष्ठ 233 से 251 तक दर्ज है। लोहा पांगल नाम के एक योगी की गुरु जाम्भोजी ने अपने आध्यात्मिक बल से काया पलट दी और उसकी जल पिलाने की उत्तम सेवा की ड्यूटी लगाई। आजकल भीषण गर्मी का प्रकोप चल रहा है। मनुष्य को जल की चौबीस घंटों जरूरत रहती है। जल सेवा मानवता की सबसे बड़ी सेवा है।

इस प्रसंग को पढ़ते ही मेरी आँखों के आगे सिक्ख पंथ के ब्रह्मज्ञानी भाई घनैया जी का मश्क (चमड़े का बनाया हुआ बड़ा थैला जिसे पीठ पर बांध कर जल पिलाया जाता है।) से पानी पिलाने वाला चित्र आ गया। भाई घनैया जी का जीवन काल 1648 ई. से 1718 ई. है। गुरु तेग बहादुर जी जो सिक्खों के नवम गुरु थे और उनके मानवता के लिये दिये हुए बलिदान के लिये उनको 'हिन्द की चादर' से स्मरण किया जाता है। भाई घनैया जी इनकी सेवा में आनंदपुर साहब छोटी आयु में ही आ गये थे। भाई साहब गाँव सोधरा नजदीक वजीराबाद जिला सयालकोट (अब पाकिस्तान) के अच्छे क्षत्रीय परिवार में पैदा हुए थे। पर यह बहुत कम आयु में ही साधु सन्तों के साथ गावों में भ्रमण करने लगे और एक दिन गुरु तेग बहादुर जी की संगत में आनंदपुर पहुँच गए और जैसी भी सेवा मिलती अपने जी-जान से उसे निभाते। नवम गुरु जी ने उनकी निष्काम भावना को जानकर उनको काहवा गाँव जिला अटक (अब पाकिस्तान) में धर्मशाला बनाकर वहाँ सेवा करने का आदेश दिया और भाई घनैया जी गुरु जी के आदेशनुसार काहवा गाँव में रहते प्रत्येक धर्म के लोगों की हर तरह से सेवा सहायता और धर्म प्रचार में जुड़ गये।

1705 ई. में आप आनंदपुर साहब आए हुए थे। इसी समय गुरु गोबिन्द सिंह जी की सेना के साथ पहाड़ी राजाओं और दिल्ली दरबार की मुगल सेना से युद्ध

आरम्भ हो गया। गुरु जी का भाई घनैया जी को आदेश था कि वह युद्ध के दौरान घायल होने वाले सभी सैनिकों को पानी पिलाने की सेवा संभाले। भाई घनैया गुरु जी के आदेश पर फूल चढ़ाते हुए अपनी सेवा निभाने लगे। युद्ध के मैदान में सभी घायलों को पानी पिलाने लगे। उनके ऊपर प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि उनको कोई शत्रु दिखाई नहीं देता था। एक दिन सिक्ख सैनिकों ने गुरु जी के पास शिकायत की कि घनैया दुश्मन सैनिकों को पानी पिलाकर दोबारा हमारे साथ युद्ध लड़ने के योग्य कर देता है। जिसको भी हम युद्ध में धराशाई करते हैं ये दोबारा उसको पानी पिलाकर हमारे सामने युद्ध में भिड़ने के लिये खड़ा कर देता है। इसको रोको वरना दुश्मन इसकी वजह से हमारे ऊपर ही भारी पड़ जाएंगे।

गुरु जी ने एक सेवक को भेजकर घनैया को बुलवाया और कहा कि हे भाई घनैया आपके खिलाफ शिकायत है कि आप दुश्मनों को युद्ध भूमि में पानी पिलाते हो। क्या यह बात सत्य है? भाई घनैया ने हाथ जोड़े और झुककर गुरु जी को आदर से बोलो हे गुरु जी! मुझे तो कोई भी दुश्मन दिखाई नहीं देता। मैं तो हर तरफ आपके दर्शन कर रहा हूँ और आपको ही पानी पिला रहा हूँ। अगर मुझसे कोई भूल हुई है तो आप मुझे क्षमा करें। गुरु जी ने कहा भाई घनैया तुम धन्य हो। तुम ब्रह्मज्ञानी की पदवी को प्राप्त हो गये हो। तुम्हें सबमें ईश्वर नजर आ रहा है, 'न को वैरी नहि बेगाना सक्लि संगि हमको वन आई।' तुम उस परम पिता परमात्मा की कृपा से द्वेष-रहित की अवस्था में पहुँच गये हो। मानवता के प्रति भावना को देखते हुए गुरु जी ने भाई घनैया को एक मरहम की डिब्बी दी और एक रुमाल और कहा भाई घनैया तुम इसी तरह घायलों की सेवा करते रहो और उनके घावों पर मरहम लगाना न भूलना और इस रुमाल के साथ उनके चेहरे साफ करते रहो। भविष्य में तुम्हारी इस सेवा के फलस्वरूप सेवा पंथी नाम का सम्प्रदाय दीन दुःखी लोगों की डटकर सेवा करेगी। आज भी संसार के बहुत सारे देशों में यह सम्प्रदाय बगैर किसी रंग, नस्ल, जाति

भेदभाव से मानवता की सेवा प्रति वचनवद्ध है।

क्योंकि रूपाराम जी एक योगी थे। उनके संस्कार अब तक सम्पूर्ण रूप में जाम्भोजी की धर्म नीति अनुसार नहीं ढले थे। गुरु जी ने उसको धरणोक गाँव में जल पिलाने की सेवा का आदेश दिया था। रूपाराम को कुछ ही दिन हुए थे जल की सेवा करते हुए क्योंकि गाँव में हर तरह के लोग होते हैं। कुछ सहायता करने वाले और कुछ विरोध करने वाले। जब रूपाराम जी आने जाने वालों को जल पिला रहे थे तो कुछ लोग वहाँ पहुँचे और रूपा जी की हंसी उड़ाते कि तुम तो भूत प्रेत जगाया करते थे। तुम्हारा बड़ा रौब था वो कहाँ गया। क्या दिया तुम्हें जाम्भोजी ने केवल यह कावड़ उठाने वाला काम। रूपाराम जी चुपचाप सुनते रहे। मगर वह मूर्ख लोग तो उनके पीछे हाथ धो कर पड़ गये। उन्होंने बहुत अनाप शनाप बातें की। ये जल का बोझ उठाये इधर-उधर घूम रहे हो। ऐसी बात सुनकर रूपा जी को क्रोध आना ही था क्योंकि अभी कुछ कमियाँ बाकी थी उनमें। उन्होंने क्रोध में आकर अपनी सिद्धि से उन मूर्खों के कपड़े जला दिये।

थोड़े समय पश्चात अमावस का पर्व था। रूपा जी सम्भराथल जाकर जाम्भोजी के चरणों में गिरकर रोने लगे और गाँव वालों के व्यवहार के बारे में सब कुछ बताया। गुरु जी ने उनको साँत्वना देते हुए धैर्य रखने के लिए कहा। गुरु जी ने रूपा को समझाया कि बिश्नोई पंथ में आने के पूर्व तुम केवल एक योगी थे और केवल अपने

भले की सोच कर रुके हुए थे। पर अब तुमको सबकी भलाई के लिए परिश्रम करना होगा यही हमारा आदेश है। तुम्हारा जीवन केवल लोहा मात्र सस्ती धातु था। अब तुमको कसौटी पर रगड़ कर चाँदी जैसी महंगी धातु सा जीवन मिल गया है। जैसे लोहे की तासीर गर्म है उसके विपरीत चाँदी की तासीर ठंडी है। अब तुम क्रोध का त्याग करो और नम्रता का पल्लू पकड़ो। लोग जो चाहें, कहें तुम अपनी जल पिलाने की सेवा मस्त होकर करो। जैसे कुत्ते भौंकते रहते हैं क्योंकि उनका जाति स्वभाव है और हाथी अपने स्वभाव हेतु मस्त चाल चलते रहते हैं, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।

जल मनुष्य का जीवन है। इसके वगैर मनुष्य जिन्दा नहीं रह सकता। श्री गुरु ग्रंथ साहब में शब्द है, 'पहला पाणी जीऊ है जितु हरिया सभु कोए।' 'पवण गुरु पाणी पिता माता धरतु महत।' अर्थात् जल ही जीवन है। जल सेवा सब से श्रेष्ठ सेवा है। बिश्नोई भाइयों से मेरी प्रार्थना है कि इस भीषण गर्मी के मौसम में जैसे भी हो सके जल की सेवा निभाएं। गुरु जाम्भोजी की शिक्षा का पालन करना हमारा धर्म है, फर्ज है।

- मोहिन्द्र सिंह राही

डेरा स्माधां बाबा मान दास

खुड्डी कलाँ, जिला बरनाला (पंजाब)

मो.: 093560-92469

माँ

मेरी माँ, थारी माँ, जात-पात ना, धरती सबकी माँ,
पंछियों की भी देखी माता,
कड़ी धूप में पंखों से करती छाता।
खुद खाए ना, चूजों को खिलाती माँ,
मेरी माँ, थारी माँ, जात-पात ना, धरती सबकी माँ।
बड़े हो गए बच्चे, उड़ गए कहाँ-कहाँ,
माँ जैसा कोई नहीं मिलना, घूमलो सारा जहाँ,
अपनी माँ वृक्ष की छाया सोए,
पंछियों की माँ टहनी में,

वृक्ष से धरती माँ भी खुश होए,
समझो जवानों! वृक्ष कहीं भी कटे तो,
तीनों ही माता फूट-फूट रोए,
मेरी माँ, थारी माँ, जात-पात ना, धरती सबकी माँ।
जब हम सुबह उठते हैं,
पंछियों की आवाज से चेहरे खिलते हैं,
Morning Walk करते हैं,
मन खुश हो जाता है, बागों में दोस्तों से मिलते हैं।

सीनू थापन, बड़ोपल, फतेहाबाद

* * * * * बधाई सन्देश * * * * *



द्युती शाह सुपुत्री डॉ. दुर्लभशाह निवासी करनाल ने AIIMS द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित MBBS की प्रवेश परीक्षा 2016 में छठा रैंक प्राप्त किया है। द्युती ने 12वीं की परीक्षा 97.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है तथा दो बार किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन छात्रवृत्ति परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुकी है।



आयुष सुपुत्र डॉ. विनोद बिश्नोई निवासी नंगथला, जिला हिसार (हाल- प्रोफेसर गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, हिसार) ने AIIMS द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित MBBS की प्रवेश परीक्षा 2016 में 168वां रैंक प्राप्त किया है।



डॉ. मनोज बिश्नोई सुपुत्र श्री रामपाल सिंह निवासी लालापुर पीपलसाना, हाल निवासी बड़ोत (बागपत) ने नेपाल (काठमांडू) में पांच दिन से चले स्काउट गाइड कैंप में दो स्वर्ण प्रदक प्राप्त किए।



सी.ए. संजीव बिश्नोई सुपुत्र श्री साहेबराम कड़वासरा निवासी गांव खेरेकां, सिरसा की पदोन्नति आंध्रा बैंक सीनियर मैनेजर के पद पर हुई है।



विजयपाल सुपुत्र श्री लालचंद बेनिवाल, निवासी जांगलू, जिला बीकानेर का चयन श्रम मंत्रालय के वैधानिक निकाय में असिस्टेंट प्रोविडेंट फंड कमिश्नर के पद पर हुआ व आपने ऑल इंडिया में 10वां रैंक प्राप्त किया।



संदीप गोदारा सुपुत्र श्री रामसिंह गोदारा, निवासी नाढोडी, फतेहाबाद ने चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग में 11 व 12 फरवरी, 2016 को हुए राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी सम्मेलन के औषध विज्ञान प्रस्तुति कार्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।



सूरज गिला बिश्नोई सुपुत्र श्री राजेन्द्र बिश्नोई, निवासी गांव अलाय, नागौर ने आईआईटी जेईई एडवांस 2016 की परीक्षा में 57वां रैंक प्राप्त की है।



कैलाश सुपुत्र श्री सुखदेव डेलू, निवासी बीकानेर का चयन भारतीय रिजर्व बैंक में प्रथम श्रेणी अधिकारी के पद पर हुआ है।



देवेंद्र गोदारा सुपुत्र स्व. श्री रमेश गोदारा, निवासी रासीसर जिला बीकानेर, ने 10वीं की परीक्षा में 98.50 प्रतिशत अंक लेकर राज्य मेरिट में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।



नीतू बिश्नोई सुपुत्री श्री सहीराम बिश्नोई (सहायक अभियंता) निवासी फलोदी, जिला जोधपुर ने 10वीं परीक्षा 97.33 प्रतिशत अंकों के साथ पास की है।



आयुष प्रताप सुपुत्र डॉ. सुरेन्द्र खीचड़, निवासी रोहतक ने CBSE बोर्ड की 10वीं परीक्षा 95 प्रतिशत अंकों के साथ पास की है।



सुप्रिया सुपुत्री श्री सुरेन्द्र लांबा निवासी 12, KSD ढाणी ससूवाला ने राजस्थान बोर्ड की 10वीं की परीक्षा 93.50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।

आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

* * * * * बधाई सन्देश * * * * *



किंजल सुपुत्री किशन लाल गोदारा, निवासी गाँव गिरधर धोरा, चितलवाना हाल मुंबई निवासी ने 10वीं की परीक्षा 94.20 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



इशिका सुपुत्री श्री राकेश ढूकिया, निवासी अलालवास, फतेहाबाद ने CBSE बोर्ड की 10वीं की परीक्षा में 9.8 CGPA अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



कुलदीप सुपुत्र श्री आत्मराम कड़वासरा निवासी असरावां, हिसार ने CBSE बोर्ड की 10वीं की परीक्षा 9.6 CGPA अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



कपिल गोदारा सुपुत्र श्री रमेशचंद्र निवासी गांव कालीरावण, हिसार ने 10वीं की परीक्षा 9.6 CGPA अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



दीक्षांत जोहर सुपुत्र श्री जगदीशचन्द्र निवासी गांव मंगाली सुरतिया हाल निवासी यमुनानगर ने 10वीं की परीक्षा 10 CGPA अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



आकांक्षा कड़वासरा सुपुत्री श्री बनवरी लाल कड़वासरा निवासी नोखा, जिला बीकानेर ने 10+2 की परीक्षा 95.17 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



दुष्यंत जौहर सुपुत्र श्री जगदीशचन्द्र निवासी गांव मंगाली सुरतिया हाल निवासी यमुनानगर ने 12वीं की परीक्षा 93 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



प्रद्युम्न सुपुत्र श्री नरसीराम बिश्नोई, निवासी हिसार ने CBSE बोर्ड की 10+2 परीक्षा 90.2 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



स्नेहा बिश्नोई सुपुत्री श्री संजय भादू एडवोकेट, निवासी गांव हरिपुरा, त. अबोहर, जिला फाजिल्का, पंजाब ने CBSE बोर्ड की 10+2 परीक्षा 92.6 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



पारूल सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र ज्याणी, निवासी ढाणी दुर्जनपुर, हिसार ने हरियाणा बोर्ड की 10वीं परीक्षा 9.8 CGPA अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।



अमिषा सुपुत्री श्री विजयपाल गोदारा, निवासी कोहली, मण्डी आदमपुर, हिसार ने हरियाणा बोर्ड की 10वीं की परीक्षा 90.2 प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण की है।



आदित्य प्रताप सुपुत्र डॉ. सुरेन्द्र खीचड़, निवासी रोहतक ने CBSE बोर्ड की 12वीं परीक्षा 90 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।



कपिल सुपुत्र श्री सरजीत तंवर, निवासी गांव लीलस, भिवानी ने हरियाणा बोर्ड की 10वीं की परीक्षा 91 प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण की है।



सुरेश कुमार सुपुत्र श्री हीरालाल पुनिया निवासी बीकानेर को जवाहर कला केंद्र के अंदर आयोजित लघु नाट्य लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

रे मन जगत सुपनो जाण, संसार मोह विकार परहरि।
सिंवरि सारंगप्राणी, जंबू जगत सुपनो जाण ॥1॥ टेक ॥
रंक सारो सहर जांच्यौ, सूतौ धरमसाला आय।
जाणौ वड भूपाल जीता, आय लागै पाय।
गांव बकसीस देअ सब आयै, भूप आपै भेंट।
जागै जोवै आसे-पासे, ठीकरो सिर हेठ ॥2॥
मूरख सुपनै हुवौ पंडित, कंठि च्यारयौ वेद।
व्याकरण पुराण स्मृति, भुवण चौथे भेद।
पंडितां आय पाय लागै, हुवौ जाणौ प्रवीण।
जागीयो सुख पड़ै पाथर, तू मूरखो मति हीण ॥3॥
बांझ सुपनै पूत जायौ, सुख वाज्यौ थाल।
ग्रह नखत जोवै जोयसी, होयसी भूपाल।
अनंता री आस पूरै, कीया कोड हुलास।
हालरो देत झबकै जागी, घातीयो न सास ॥4॥
निधन जाणौ हुवौ धनवंत, सांपतो द्रब कोड़ि।
एक रंभा पांव चापै, एक ऊभी कर जोड़ि।
खवास चहुं दिस चंवर ढोळै, सूतो कनक अवास।
एम करि ज्यौ जागीयो, नहीं खुड़ दो पास ॥5॥
संसार सागर विषम लहरी, मृघ तिसनां जळ।
दिन मांहे तीन विरीयौ, सदा झपै काळ।
नांव-नांव का खाळक खेवट सदाई संभाळ।
उधो आखै सत भाखै, निज हिरदै नाळ ॥6॥

1. हे मन, इस संसार को स्वप्न जानो। इसके मोह-माया को

- त्याग करके, कृष्ण भगवान का स्मरण करो।
2. किसी भिखारी ने सारे शहर में माँगा और रात्रि को धर्मशाला में सो गया। स्वप्न में वह राजा बना और लोग उसके पाँव पड़ते हैं, वह उन्हें गांव भेंट दे रहा है। राजाओं से उसकी भेंट हुई है। जब नींद टूटी तो अपने आसपास देखा तो वही भिक्षा-पात्र उसके सिर के नीचे रखा था।
 3. मूर्ख स्वप्न में पंडित बन गया और चारों वेद उसके कण्ठस्थ हो गये। उसे व्याकरण पुराणों और स्मृति की जानकारी हुई। वह चारों लोकों के भेद भी जानने लगा। पंडितजन विद्वान समझकर उसके पाँव छूते हैं। उसकी नींद टूटी तो उसे अपनी मूर्खता का पता चला, उसके सुखों में खलल पड़ गया।
 4. बांझ स्त्री ने स्वप्न में पुत्र को जन्म दिया और सुखी होकर थाल बजाया। पण्डित ने उसके ग्रह नक्षत्र देखकर उसे राजा बताया। उसकी आशा पूर्ण हुई और वह बहुत हर्षित हुई। अपने पुत्र को झुलाते समय वह जाग गई और वास्तविकता देखकर हक्की-बक्की रह गई।
 5. स्वप्न में निधन धनवान हो गया और करोड़ों की सम्पत्ति हो गई। एक स्त्री उसके पाँव दबा रही है और दूसरी उसके पास हाथ जोड़े खड़ी है। सेवक उसको चंवर ढुलाते हैं और वह सोने के महल में सोया हुआ है। नींद टूटने पर उसे मालूम हुआ कि उसके पास दो कौड़ी भी नहीं है।
 6. यह संसार एक समुद्र के समान है, जिसमें तृष्णा रूपी जल और विषय भोग रूपी लहरें हैं। यहां यम का तीन बार आक्रमण होता है। इन विषय लहरों से बचाने वाला विष्णु भगवान है। कवि ऊधोजी सत्य कहते हैं कि हमें अपने हृदय में उनका स्मरण करना चाहिए।

हरजस (राग घूमर)

सतगुरु दरसण भै जास्यां,
निज पूरब प्रीत पिछाणी ए माय, सतगुरु दरसण भै जास्या ॥1॥ टेक
तन मन फूली सुधि बुधि भूली, चरणां में लपटांणी ए माय ॥2॥
कथा प्रसगा नित नव अंगा, चरचा रूचि उपजांणी ए माय ॥3॥
हरि गुण गुणस्यां हिरदैमां भणिस्या, सुणि-सुणि इम्रत
बाणी ए माय ॥4॥
हरि रंग राचो प्रेम सू नाची, रोम-रोम विगसांणी ए माय ॥5॥
ऊधोदास प्रेम प्रकासा, हरि मैं सूरत समांणी ए माय ॥6॥

1. हम तो सतगुरु के दर्शन करने के लिए जायेंगे। हे माँ, हमने अपने पूर्व जन्म के कर्मों से यह जान लिया है, हम तो सतगुरु के दर्शन करने के लिए जायेंगे।
2. तन-मन में बड़ी खुशी है, इससे मैं अपनी सुध-बुध भूल

- गया हूँ। हे माँ मैं तो उन सतगुरु के चरणों में लिपटूंगा।
3. मेरे मन में उनके ही कथा-प्रसंग हैं और हे माँ, मैं उनकी ही चर्चा हमेशा अपने मन में करता हूँ।
 4. भगवान के गुणों को धारण करेंगे, हृदय में उन्हें याद करेंगे और हे माँ, उनकी ही अमृतवाणी सुनेंगे।
 5. मैं हरि रंग में रच गया हूँ, और उनके प्रेम में नाच रहा हूँ। हे माँ उनका प्रेम मेरे रोम-रोम में विकसित हो गया है।
 6. कवि ऊधोदास जी को हरि के प्रेम का प्रकाश मिल गया है। वे कहते हैं- हे माँ, यह आत्मा हरि के अन्दर ही समा जायेगी। (कवि हरजस राधा की ओर से कल्पना करके यह कहते हैं।)

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

विवाह के गीत (प्रथम दिन)

भधै तो भधावो म्हारै इन्द जी नै, इन्द जी बुठा धरती निपजै।
 भधै तो भधावो म्हारै सूरज जी नै, सूरज उग्या कुल चानणोजी।
 भधै तो भधावो म्हारै फळसो जी नै, फळसो म्हारो सोनै रूपै मंदायो जी।
 भधै तो भधावो म्हारी पोळीया नै, पोळ में दादो सुत्या जी।
 भधै तो भधावो म्हारी भेंस्या नै, जारा सोनै गा बिलोवणा जी।
 भधै तो भधावो म्हारै धोळिया नै, जांरा ए जाया धोळा हळ बगै जी।
 भधै तो भधावो म्हारी सांड्या नै, जांरा ए जाया कासी करवला जी।
 भधै तो भधावो म्हारी घोड़या नै, जांरा ए जाया धोड़ा जव चरै जी।
 भधै तो भधावो म्हारी बहुआ नै, जांरा ए जाया हिंडै पालणै जी।
 भधै तो भधावो म्हारी सासु जी नै, जांरा ए सान्दया लाड्डू जीमस्या जी।
 भधै तो भधावो म्हारै रूखा नै, जारा ए मीठा फळ जीमस्या जी।
 भधै तो भधावो म्हारै बिसणु जी नै, जिण नै जपण स्युं मोक्ष उपजै जी ॥

म्हारै आंगण आम्बो सुवटो बोल रहयो।
 थे तो सुत्या जागो सिव रामू जी गा।
 थे तो किवाड़ उघाड़ो सिव रामू जी गा।
 थे तो भीतर जोगा ओ, बाहर क्युं ओ खड़या?
 थे तो जाजम जोगा ओ, पगलै क्युं ओ खड़या?
 थारै मोड़ां गै मोखी ओ, साजन निरख रहया।
 थारै चावल सीजै ओ, मूंग दळीज रहया।
 थारै साजन जीमै ओ, सहेल्यां गाय रही।
 थारै भेंस्यां दूजै ओ, पाडा रीडक रहया।
 थारै गाया दूजै ओ, बाछा चूंग रहया।
 थारै घोड़ा घूमै ओ, हथणी हींस रही।
 थारी जात न जाणा ओ राजू जी टींडसिया।
 थारी मां बिणजारी ओ, बाबो बाळदियो।
 थारी दादी डाकण ओ, नानी जरख चढ़ी।
 थारी भुआ भगतण ओ, मौसी मुणास किया।
 थारी काकी करमण ए, बड़ी बडरया धरया ॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

पर्यावरण-प्रदूषण किसी भी प्रकार का हो, वह जीवन के लिए घातक है। वायु, जल तथा अन्य प्रदूषणों के समान ध्वनि प्रदूषण भी हानिकारक है। इससे अनेक हानियाँ होती हैं। जिनका घर ध्वनि-प्रदूषण के निकट है उनकी मृत्यु जल्दी होती है।

यह वैज्ञानिकों की खोज है कि जिसके घर के पास वाहनों का अधिक आवागमन होता है उनकी मानसिक शान्ति भंग होती है। विद्यार्थियों की पढ़ाई नहीं होती है, कुछ को तो नींद भी नहीं आती है।

शोधार्थियों ने करोड़ों लोगों, लंदन निवासियों के सन् 2003 से और 2006 तक के आंकड़े का विश्लेषण किया है। उन्होंने प्रातःकाल सात बजे से रात्रि काल के ध्वनि स्तर का निरीक्षण और परीक्षण किया है। उन्हीं मृतकों और अस्पतालों प्रवेश का क्षेत्रों के अनुसार 25 वर्षीय या उससे अधिक आयु वालों का 75 वर्षीय वृद्धों पर ध्वनि-प्रदूषण के प्रभाव का आंकलन किया है। वयस्कों में मृत्युदर चार प्रतिशत और वयोवृद्धों में मृत्यु दर अधिक थी।

शोधार्थियों का अनुसंधान था कि ध्वनि प्रदूषण के कारण हृदयरोगों में अधिक वृद्धि होती है। ध्वनि-प्रदूषण में इस रक्तचाप में वृद्धि होती है। रोगी भी अधिक होते हैं। मानसिक तनाव का ध्वनि-प्रदूषण सबसे बड़ा कारण है। यह शोध आलेख यूरोपियन हार्ट जनरल में प्रकाशित हुआ था। आज के इन वैज्ञानिक आविष्कारों और तकनीकी युग में ध्वनि-प्रदूषण का स्तर निरन्तर बढ़ रहा है।

महानगरों में सर्वाधिक ध्वनि-प्रदूषण है जिसके कारण लोग क्रोधी, चिड़चिड़े स्वभाव के और असंवेदनशील हो रहे हैं। हृदय रोग और मानसिक तनाव बढ़ रहा है। लोगों में सहनशक्ति कम हो रही है। कई लोग

कानों से बहरे हो रहे हैं। ध्वनि के कई स्तर और भेद हैं। क्रोध में ध्वनि का स्वर कर्कश और ऊँचा होता है। प्रेम में ध्वनि मधुर होती है।

डी.जे. की ध्वनि और संगीत की ध्वनि में अंतर है। संगीत मधुर होता है, पर डी.जे. आदि वाद्ययंत्र ध्वनि प्रसारक यन्त्र स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। सुगम-संगीत, मुरली वादन, हारमोनियम वादन, शास्त्रीय संगीत रस आनन्द और माधुर्य के स्रोत हैं।

नगाड़ा आदि की ध्वनि का स्तर ऊँचा होता है। मंदमंद मेघ-गर्जन सुखदायक होता है। बिजली की कड़क ध्वनि भयकारक होती है।

आज सारा संसार ध्वनि प्रदूषण से पीड़ित है। जब युद्ध में तोपें गरजती हैं तब लोगों के हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। परमाणु बम का विस्फोट तो बड़ा भयंकर है। भारत में वाहनों, हवाई जहाजों और युद्धाभ्यास के कारण ध्वनि-प्रदूषण होता है। ध्वनि प्रदूषण के कुप्रभाव से बचने के उपाय हैं। प्रकृति शरण में निवास करना, निवास स्थान राष्ट्रीय राजमार्गों या बहुत व्यस्त ट्रैफिक वाली सड़कों के पास घर न बनवाना, मानसिक संतुलन का नाम ही योग है।

भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद् गीता में कहा है 'समत्वम् योग उच्यते'। ध्वनि-प्रदूषण के कारण मानसिक संतुलन न रहने के कारण मानसिक तनाव बढ़ता है जिससे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और मानसिक रोगों में वृद्धि होती है। इसलिए अनावश्यक ध्वनि प्रदूषण करना पर्यावरण के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

डॉ. ब्रह्मानन्द

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र



मोटापा एक खतरनाक बीमारी है, जिसका प्रभाव व्यक्ति के पूरे शरीर पर पड़ता है। स्वास्थ्य क्षेत्र में हो रहे शोध और रूझानों से पता चलता है कि लिवर को इस समय सबसे बड़ा खतरा मोटापे से है। इस देश में मोटापे की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। चार में से तीन व्यक्ति भारत में अधिक वजन से पीड़ित है। मोटापे से अनेक बिमारियाँ पैदा होती है। जिससे व्यक्ति को स्वस्थ जीवन में कठिनाई पैदा होती है और सामान्य जीवन में भी कार्य करने में मोटापा व्यक्ति को असमर्थता पैदा करता है। मोटापे का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर बुरा असर डालता है। फास्टफूड व जंक-फूड का अत्यधिक सेवन मोटापे को बढ़ावा देता है। हमें मोटापे से बचने के लिए खान-पान, रहन-सहन पर ध्यान देना होगा। हमें स्वस्थ रहने के लिए सुबह-शाम हमेशा एक घण्टा शारीरिक क्रियाएँ अवश्य करनी चाहिए। मोटापे से शरीर के जोड़ों का दर्द शुरू हो जाता है। इसका प्रभाव हमारे आन्तरिक अंगों पर भी पड़ता है।

मोटापा बढ़ने का विज्ञान बड़ा सीधा-सादा है। यदि आप खाने-पीने के रूप में जितनी कैलोरी ले रहे हैं, उतनी बर्न नहीं करेंगे तो आपका वजन बढ़ना तय है। दरअसल बची हुई कैलोरी ही हमारे शरीर में मोटापे के रूप में जमा हो जाती है और हमारा वजन बढ़ जाता है। वजन कम करने की प्रक्रिया शुरू करने से पहले आपको यह जानना चाहिए कि आपका वर्तमान वजन सही है या नहीं, BMI एक बहुत ही Simple Tool है, जो आपके वजन और लम्बाई के हिसाब से शरीर में कितना Fat है, बताता है। आपका BMI यह बताता है कि आप किस Weight में आते हो:-

18.5 से कम	-	Under-Weight
18.5 से 25	-	Normal
25 से 29.9	-	Over-Weight
30 से ज्यादा	-	Obese

मोटापे से बचने के घरेलू उपाय:-

- ❖ एक कप पानी में आधा चम्मच दालचीनी चूर्ण मिलाकर उबाले तथा ठंडा होने पर इसमें एक चम्मच शहद मिलाकर प्रातः नाश्ते व रात को सोने से पहले पी लें। इस प्रयोग से वजन कम होता है।
- ❖ 250 ग्राम पानी में एक नींबू निचोड़कर सुबह खाली पेट पीने के बाद दोपहर को 10 ग्राम शहद 125 ग्राम पानी में मिलाकर केवल गर्मियों में दो महीने सेवन करें। इससे मोटापा कम हो जाता है।
- ❖ एक चम्मच त्रिफलता चूर्ण को रात्रि में 200 ग्राम पानी में मिलाकर रखें, प्रातः उबालें तथा आधा शेष रहने पर छान लें तथा ठंडा होने पर इसमें दो चम्मच शहद मिलाकर पियें। कुछ दिनों के सेवन से मोटापा घटना शुरू हो जाएगा।
- ❖ लहसून में मोटापा कम करने वाले तत्व होते हैं। एक कप पानी में नींबू निचोड़कर लहसून के तीन जवों के साथ सुबह-शाम खाली पेट इसका सेवन नियमित रूप से करना चाहिए।
- ❖ जितनी भूख है उससे कम खाएँ। जंक-फूड का सेवन न करें, मिठा भी ज्यादा न खाएँ।
- ❖ रोज रात में छः से आठ बादाम भिगोएं और अगले दिन सुबह बादाम को छिलकर खाएं। बादाम में मौजूद ओमेगा-5 Fatty Acid चर्बी कम करने मददगार होता है।
- ❖ अदरक को दो टुकड़ों में काटकर एक कप पानी में दस मिनट तक उबाले और टुकड़े हटाकर पानी पियें, इससे वजन कम होता है।
- ❖ भोजन पकाते समय ऐसे मसालों का उपयोग करें जो वजन कम करने में मदद करें। जैसे- दालचीनी, अदरक, काली-मिर्च, लहसून आदि।
- ❖ खूब सब्जियाँ खाएँ तथा फलों का सेवन करें।

मोटापे के साइड इफेक्ट:-

डायबिटीज, कैंसर, ब्लड-प्रेसर, अपच, हार्ट-अटैक, जोड़ों में दर्द, स्कीन इन्फेक्शन, उच्च कलोस्ट्रॉल स्तर, कमर दर्द, अल्सर, गालस्टोन।

योग से मोटापा दूर करने के लिए निम्नलिखित आसनों का अभ्यास करना चाहिए। ताडासन, अर्ध चंद्रासन, उत्करासन, वृक्षासन, पश्चिमोतानासन, अकर्णधनुरासन, गोमुखासन, वज्रासन, हलासन, चक्रासन, सर्वांगासन, नौकासन, भुजगांसन, धनुरासन, शलमासन, प्राणायाम्, सूर्यनमस्कार तथा शुद्धि क्रियाओं के द्वारा मोटापा दूर किया जा सकता है।

शारीरिक क्रियाएँ:-

- ❖ दण्ड बैठक का अभ्यास करना चाहिए। एक से तीन Repitation 20-20 की लगानी चाहिए। धीरे-धीरे इसकी संख्या बढ़ानी चाहिए।
- ❖ लेटकर अपने पैरों को 45° कोण पर रोकना

चाहिए। 1-3 मिनट तक इसका अभ्यास करना चाहिए। इससे हमारे पेट पर जरूरत से ज्यादा बढ़ा हुआ पोटापा घट जाएगा और हमारी मासपेशियाँ मजबूत बनती हैं।

❖ Cycling - व्यक्ति को कम से कम 30 मिनट तक सुबह-शाम साइकिल चलानी चाहिए। ऐसा करने से मोटापा दूर होगा और वायु प्रदूषण से भी कुछ हद तक निजात मिलेगी। Cycling करने से शरीर की सभी Muscles Activate होती हैं।

संदर्भ:-

1. www.sachkagoon.in
 2. www.nirogikaya.com>Home>Health
 3. hinditips.com>स्वास्थ्य की देखभाल
 4. www.onlyhealth.com|search-obesity
 5. Bhumbak Ravinder: "Effect of selected Topic" asanas on obesity of people in hisar Distt.
- रविन्द्र कुमार भुम्बक, सहा. प्रो. शारीरिक शिक्षा, रा.महा., भट्टू कलां, फतेहाबाद (हरियाणा)



दहेज प्रथा

- जले जहाँ मासूम जवानी, हर घर वो श्मशान है। दहेज के खातिर जिस घर में नारी का अपमान है। निर्धन की बेटी को मिलता जीने का अधिकार नहीं। न्याय के ठेकेदारों बोलो क्या यह अत्याचार नहीं। स्टोव फटा, बिजली ने पकड़ा क्या यह झूठा प्रचार नहीं। जहर खा लिया, फांसी दे दी फिर भी पाया प्यार नहीं। पड़ी सड़क पर सड़ती लाशें, ना होती पहचान है। जले जहाँ मासूम जवानी, हर घर वो श्मशान है।
- नई नवेली दुल्हन आई जीवन का बीमा करवाया। आग लगाई घर के अंदर जिंदा बहू को गया जलाया ॥

चोट यातनाएँ सहे बहू और दुनिया को बीमार बताया। नरम बदन पर गर्म सलाखें कम दहेज की मिली सजाएँ ॥ मजहब के ठेकेदारों बोलो क्यों बढ़ गई जुबान है। जले जहाँ मासूम जवानी हर घर वो श्मशान है ॥

- दया-धर्म के सौदागर कहते हैं, खुद को दानी। छान के पानी पीने वाले पी जाते हैं लहू इंसानी ॥ उजड़े लाखों आज घराने उनकी है सब मेहरबानी। सब्जी से सस्ती है दहेज के कारण आज जवानी ॥ दहेज न लाने वाली बहुएं दो दिन की मेहमान हैं। जले जहाँ मासूम जवानी, हर घर वो श्मशान है ॥

-पुष्पा सुथार
मंगाली, हिसार



पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
हरा भरा जीवन बनाओ ।
छाया ये हमको देते हैं,
फल ये हमको देते हैं ।
प्रदूषण दूर हटाते हैं,
हम भी पेड़ लगाएंगे ।
संसार को हरा-भरा बनाएंगे ।

मेरा गाँव

कितना प्यारा मेरा गाँव ।
पीपल दादा देते छाँव ॥
भीनी-भीनी हवा मचलती,
मेरे आँगन आती ।
मैदानों में चरती गायें,
इतरार्ती, इठलार्ती ॥
रोज सुबह चिड़ियों का गुंजन,
मीठे गीत सुनाता ।
बच्चों की किलकारी सुनकर,
मन पुलकित हो जाता ॥
पगडंडी पर चलते-चलते,
यहाँ नहीं थकते हैं पाँव ।
इतना प्यारा मेरा गाँव ॥



- सिद्धि वशिष्ठ, हिसार



कुम्हलाये हैं फूल

अभी-अभी तो खिल आये थे
कुछ ही विकसित हो पाये थे
वायु कहां से आकर इन पर
डाल गयी है धूल
कुम्हलाये हैं फूल ।
जीवन की सुख घड़ी न पायी
भेंट न भ्रमरों से हो पायी
निष्ठुर-नियति कोमल शरीर में
हल गयी है शूल
कुम्हलाये हैं फूल ।
नहीं विश्व की पीड़ा जानी
निज छवि देख हुए अभिमानी
हंसमुख ही रह गये सदा ये
वही एक थी भूल
कुम्हलाये हैं फूल ।

- मनु व संस्कार, हिसार

धरती

धरती एक
बनाई थी उसने
हमने सीमाओं की
बेड़ियाँ पहना दीं ।
मनुष्य एक-सा
बनाया था उसने
हमने धर्म की
हथकड़ी पहना दी ।
यह क्या किया हमने
कायनात की
हर चीज़ को बाँट दिया
हमारा बस चले तो
सूरज-चाँद-सितारों को भी बाँट दें
उनकी सीमाएँ भी बना दें ।
इस प्रकृति का
मोल लगाकर, उसे भी
हथकड़ियों में
कैद कर लें ।



12वीं के बाद विद्यार्थियों को समझ में नहीं आता है कि वह किस विषय का चुनाव करे, जो भविष्य में उसके लिए सफलता के दरवाजे खोले। परिवार के आधे लोग चाहते हैं कि वह इंजीनियर बने, आधे चाहते हैं कि वह सिविल सर्विसेज में जाए, दोस्त उसे बिजनेस कोर्स की सलाह देते हैं लेकिन उसका मन एयरफोर्स में जाने का है। अत्यधिक विकल्प होने के कारण वह भ्रमित है कि वह कौन से विषय का चुनाव करे ?

दरअसल, यह उलझन हर उस विद्यार्थी की है, जो विषयों के विकल्पों के बीच अपना भविष्य तलाश रहा है। एक समय था, जब सीमित ही विकल्प होते थे जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं सिविल सर्विसेस। अच्छे विद्यार्थी इन्हीं की ओर रुख करते थे। लेकिन आज उसके समक्ष इतने विकल्प हैं कि वह भ्रमित हो जाता है और अगर उसने सही तरीके से विषय का चुनाव नहीं किया तो उसका भविष्य ही दांव पर लग जाता है।

कुछ मुख्य बिंदु जिन पर आपको विचार करना चाहिए-

1. **लक्ष्य पहले से सुनिश्चित कीजिए-** आपको क्या बनना है, इसकी सोच आपको पहले से ही सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। जब लक्ष्य सुनिश्चित होता है, तो आप सही दिशा में आगे बढ़कर प्रयास करते हैं, वहीं भ्रम आपको दिशाहीन कर देता है। इस समय देश में जिस तरह से नए-नए संस्थान खुल रहे हैं तथा वहां पढ़ने वालों की तादाद बढ़ रही है, उसके मुताबिक शिक्षा का स्तर नहीं बढ़ा है इसलिए हर साल महाविद्यालयों से हजारों की तादाद में तकनीकी या गैर तकनीकी स्नातकों के निकलने के बाद भी नौकरियां नहीं मिलती हैं। जहां तक सही कोर्स चुनने का सवाल है, तो छात्रों को सबसे ज्यादा शीघ्र नौकरी मिलने वाले क्षेत्रों का ध्यान रखना होगा।

2. **अपने करियर की योजना बनाएं-** आज हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। व्यावसायिक विषयों में सीमित प्रवेश संख्या होती है, प्रतिस्पर्धियों की संख्या ज्यादा है। आप में भले ही बहुत प्रतिभा या क्षमता हो, मेरिट हो, लेकिन मुमकिन है कि पसंद के कोर्स या कॉलेज में दाखिला न मिले। इसके लिए जरूरी है कि एक अलग योजना तैयार रहे। विकल्पों के लिए करियर काउंसलर, शिक्षकों, पुराने छात्रों या किसी की भी मदद ली जा सकती है।

3. सही विषय का करें

चुनाव- 12वीं के बाद कोई खास कोर्स चुनना एक विद्यार्थी की रुचि और विकल्पों पर निर्भर करता है। अगर आप कलाकार या रचनाशील हैं तो विज्ञापन, फैशन, डिजाइन जैसे कोर्सेज चुन सकते हैं। अगर आपका दिमाग विश्लेषक है तो आपके लिए इंजीनियरिंग या टेक्नोलॉजी के क्षेत्र बेहतर होंगे। यहां बहुत सारे विशेषज्ञ कोर्सेज भी हैं जिन्हें करने के बाद करियर में ऊंची उड़ान भर सकते हैं। ऐसे में विद्यार्थी जब भी किसी खास कोर्स या प्रोग्राम में दाखिला कराने जाएं तो एक बात स्पष्ट रखें कि उस प्रोग्राम को चुनने के पीछे करने का उनका मकसद क्या है? फिर भी अगर भ्रम बना रहे तो अपना प्रोफाइलिंग टेस्ट कराएं। इससे आपको अपनी शक्ति का पता लग सकेगा और आप उसके मुताबिक कोर्स सिलेक्ट कर सकेंगे। कोर्स का सिलेक्शन करते समय इन खास बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

अपने पसंदीदा विषय को देखते हुए ही कोर्स चुनें। दूसरों की नकल से बचें, क्योंकि हर छात्र का लक्ष्य, प्रतिभा और रुचि अलग होती है।

क) स्वमूल्यांकन करें, कोई भी कोर्स का चुनाव करने से पहले यह आत्मनिर्णय करना चाहिए कि आपकी किस काम में ज्यादा रुचि है। आप उन सभी विकल्पों की सूची बनाएं जिनमें आप स्वयं को साबित कर सकते हैं।

ख) विकल्प तलाशें- एक समय था, जब विकल्प सीमित थे। विज्ञान विषय के छात्रों के पास सिर्फ मेडिकल या इंजीनियरिंग के विकल्प होते थे, लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। आज आपके सामने विकल्पों की भरमार है। आप बायोटेक्नोलॉजी, बायोइंजीनियरिंग, फिजियोथैरेपी, ऑक्यूपेशनल थैरेपी, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन जैसे कोर्सेज कर सकते हैं। इसी तरह आर्ट्स से 12वीं करने वाले बिजनेस या होटल मैनेजमेंट कोर्स कर रिटेलिंग, हॉस्पिटैलिटी, टूरिज्म इंडस्ट्री का हिस्सा बन सकते हैं। जो लोग रचनाशील हैं, वे फैशन डिजाइनिंग, मर्चेंडाइजिंग, स्टाइलिंग का कोर्स कर सकते हैं।

ग) संस्थान का चुनाव- आजकल संस्थानों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा होती है लेकिन सरकारी एवं प्राइवेट संस्थानों में प्रवेश लेने से पहले जरूर विचार कर लें।

सफलता के लिए परिश्रम और सही दिशा की आवश्यकता है। परन्तु आज सब कुछ जल्दी प्राप्त करने की कोशिशों की जा रही हैं तथा तरह-तरह के सेमिनार और वर्कशॉप आयोजित किये जाते हैं। इसलिए यह प्रश्न भी बार-बार उठ रहे हैं कि इस दुनिया में क्या कुछ भी शार्टकट से प्राप्त किया जा सकता है। इसमें ज्यादातर का जवाब ना ही होगा। शार्टकट में अगर किसी को सफलता मिलती है तो वह शार्ट अर्थात् थोड़े समय के लिए मिलती है। इससे यह प्रमाणित है कि आपको कुछ पाने के लिए परिश्रम तो करना ही पड़ेगा।

मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि केवल सफलता के मामले में आज के इस दौर में हर किसी को चाहे वह छात्र-छात्राएँ हो या कोई अन्य क्षेत्र में कार्य करने वाला हो, सब कुछ जल्दी पा लेने का प्रयास करते हैं। वह भी अनैतिक तरीकों से, जो कि आपके आचरण को भ्रष्ट करती है ऐसी व्यवस्था का विरोध किया जाना ही चाहिए। दुर्भाग्य से हमारे देश में कई नेता, साधु-संत भ्रष्टाचार के केस में सजा भुगत रहे हैं या कोर्ट में ट्रायल का सामना कर रहे हैं।

जीवन में अच्छे आचरण की हमेशा कीमत चुकानी ही पड़ती है। यह अच्छा आचरण आपके चरित्र और व्यक्तित्व को महान बनाता है। जीवन में अगर हमें इसे संस्कारों से जोड़ दें तो सचमुच सफलता मिल सकती है। जीवन में बिना मेहनत के कुछ भी पाना संभव नहीं है। यह बात एक अच्छे इंसान को समझ लेनी चाहिए। आप तीर से निशाना साध सकते हैं, तुक्के से नहीं। इसलिए कहा भी गया है कि जो चल रहा है वो तीर, और नहीं

चला तो तुक्का।

यही वजह है कि परीक्षा में अक्वल आने के लिए, अपना कैरियर सही दिशा में लाने के लिए और नौकरी पाने के लिए आपको कुछ न कुछ असाधारण करके दिखाना ही पड़ता है। नौकरी के लिए जुगाड़ के दम पर थोड़ी देर के लिए आपको सफलता मिल जाएगी, परन्तु वह शार्टकट वाली ही होगी। स्थायी सफलता तो परिश्रम से ही मिलेगी। जिस छात्र ने परिश्रम करके टॉप पोजिशन लेकर परीक्षा दी है, उसे कोई डर नहीं होता। वह एक बार नहीं चुना जाता, दो बार नहीं चुना जाता, तीन बार नहीं चुना जाता लेकिन शार्टकट पर नहीं चलता, तो अगली बार अवश्य ही सफलता प्राप्त करेगा। परिश्रम का फल देर से मिलता है, परन्तु परिश्रम का फल खाने के लिए धैर्य रखना पड़ता है। किसान खेत में बीज डालता है तो पहले ही दिन फसल नहीं तैयार हो जाती। कई महीनों के बाद फसल तैयार होती है। स्थाई सफलता के लिए परिश्रम और ईमानदारी के साथ-साथ सत्यता पर चलना होगा। यही एक अच्छे इंसान की पहचान है। जीवन में अब यह तय हो गया है कि सफलता के लिए परिश्रम ही अति आवश्यक है। नैतिकता तथा ईमानदारी के अपने टारगेट पर खुद को फोकस करें तभी सफलता मिलेगी। इसलिए परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

गुरु जाम्भोजी ने अपनी सबद वाणी में कहा है कि- “सुकृत अहल्यो ना जाई।” अर्थात् शुभ कार्य ईमानदारी से करो व कभी व्यर्थ नहीं जाता, उसका फल अवश्य मिलेगा।

-तनिषा गोदार

पाठकों के लिए सूचना

आपको सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपकी पुरजोर मांग का सम्मान करते हुए बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति पत्रिका का जम्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करना स्वीकृत किया है। यह विशेषांक अगस्त-सितम्बर, 2016 का संयुक्त अंक होगा, इसलिए अगस्त, 2016 का अंक प्रकाशित नहीं होगा। जिन पाठकों का सदस्यता शुल्क अगस्त तक पूरा हो रहा है, वे समय से अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवाकर अपनी विशेषांक प्रति सुरक्षित करें। नये पाठक भी समय रहते सदस्य बनकर लगभग 150 पृष्ठों (विज्ञापन सहित) में प्रकाशित होने वाले इस भव्य विशेषांक की अपनी प्रति सुरक्षित करें क्योंकि यह विशेषांक सीमित संख्या में ही प्रकाशित होगा।

-सम्पादक

कन्या भ्रूण-हत्या पाप है : इसके जिम्मेदार आप हैं

महिला सशक्तिकरण को लेकर संसद से लेकर समाज की दहलीज तक हंगामा हो रहा है। जोर-शोर से दावे किए जा रहे हैं कि सरकारी नौकरी और निर्वाचन क्षेत्र में महिलाओं को आरक्षण देने से महिलाओं में अपनी क्षमता को पहचानने की शक्ति जागृत होगी और वे अपने आपको सशक्त महसूस करेगी। ये सराहनीय प्रयास है। महिला साक्षरता का आंकड़ा निरंतर चरम शीर्ष को प्राप्त हो रहा है। लेकिन आज भी महिला उत्पीड़न कम नहीं हुए हैं। महिलाओं को कहीं दहेज के लिए तो कहीं रूढ़िवादी परंपराओं की शिकार बनाया जाता है। इस दिशा में एक प्रयास जो महिलाओं पर दयाभाव के स्थान पर समानता को बढ़ावा देगा। वह महिला वर्ग को खुद स्वावलंबी आत्मनिर्भर और साहसी बनना होगा। उसे न केवल स्वयं को अबला से सबला बनाना होगा बल्कि समाज के हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधा मिलाकर अपना वर्चस्व स्थापित करना होगा।

जिसमें न तो महिला वर्ग अपने को हीन या अबला समझेगी और न ही पुरुष वर्ग अपने पर उसकी आश्रितता के भार से होकर उन पर जुल्मों का कहर ढहाएगा।

इसमें मुद्दे की बात यह है कि अगर महिलाएँ अपनी सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक दायित्वों के साथ आत्मनिर्भर बनेंगी, यथा वे अपने कौशल को अपनी रूचि क्षेत्र में लगाकर आर्थिक उत्पादकता हासिल करने की कोशिश करें तो सकारात्मक परिणाम सामने होंगे। हालांकि आज समाज के प्रत्येक वर्ग में महिला की भागीदारी बढ़ी है फिर भी विषमता अपने चरम बिंदु पर है।

आज एक और तो महिलाएं भौतिक परिवेश में बढ़चढ़ कर खुद को साबित कर रही हैं परंतु दूसरी तरफ अर्थात् कहने का भाव यह है कि हमें सादगीपूर्ण जीवनयापन कर अपने अतिरेक को पिछड़े क्षेत्र में लगाकर उन्हें भी प्रगति की ओर प्रवृत्त करना चाहिए। पर शायद यह एक विकसित और प्रगति की कल्पना मात्र है क्योंकि आज की यथार्थ स्थिति कुछ और है! आज अहंकार 'मैं ही हूँ' होशियार, समृद्ध और समझदार' वाली स्थिति है और तो और सहानुभूति सद्भावना व पारस्परिक प्रेम भावना के शब्द हिन्दी शब्दकोष के पुराने शब्द हो गए हैं। इसलिए इनका प्रयोग प्रचलन से बाहर हो रहा है। यह समझना

आवश्यक है कि व्यक्ति अगर वक्ता है तो महिला सृजनकर्ता है। संसार कि समस्त शक्ति का संचरण महिला से ही है। आज दहेज उत्पीड़न का यह समाज के हर वर्ग में व्याप्त है तो क्या इसके लिए महिला सिर्फ अपनी सहनशीलता का परिचय देती रहेगी और चुपचाप यह साबित करती रहेगी कि वह पराये घर का धन है जो ब्याज सहित लौटाना होता है। इस धन को प्रश्रय देने वाला (माता-पिता) बर्बाद या बोझिल होगा। दहेज विरोधी कानून से समस्या का निवारण संभव नहीं है, समस्या आज भी जस की तस है।

आवश्यकता है कि महिलाएँ इस दिशा में फलदायी कदम उठाएं। अपने अधिकार क्षेत्र को मजबूती से समाज के सामने रखें। महिला ही पोषक द्वारा संचित प्रखर प्रतिभा को समर्पित करती हैं, तो क्या धन या भौतिक वस्तुएँ इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है। प्रतिभा या कौशल से धन कमाया जा सकता है। इसलिए वैवाहिक जीवन में सुमंगलता लाने वाली यह प्रथा क्यों अभिभावकों पर बोझ बने, पराए धन के इसी ब्याज (दहेज) के फेर में आज कितने माता-पिता जन्म से पूर्व ही कन्यावध कर देते हैं या उत्कृष्ट प्रतिभा को चारदिवारी की चोखट ही नहीं लांघने देते, उसकी प्रतिभा के सृजन की उपेक्षा करते हैं। क्या महिला कुछ नहीं कर सकती अपने माता-पिता के लिए अपने स्वाभिमान के लिए, क्या हमें गंवारपन का दामन धारण करना चाहिए या बदलाव लाना चाहिए!

समाज में व्याप्त बोझिल प्रवृत्ति की इन प्रथाओं को शिक्षित व सुसंस्कृत पीढ़ी द्वारा उखाड़ फेंक देनी चाहिए, यही तो समय की मांग है। आज महिला शिक्षा को लेकर जो रूढ़िवादी धारणा व्याप्त है वो अशिक्षित परिदृश्य में ज्यादा दृष्टिपात हो रही है। शिक्षा संस्कार, समझदार और चेतना का चरम बिंदु है जो किसी भी परिस्थिति को अनुकूल बनाने का आधार है। अतः आवश्यक है कि समाज की दशा व दिशा की आधार 'महिला' का शिक्षित होना ही समाज की सामाजिक व आर्थिक उन्नति है।

“बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ”

-सचिन कुमार सिंवर पुत्र श्री सुखराम सिंवर
गांव बज्जू, बीकानेर (राज.)

नैतिक मूल्यों का हास

वर्तमान समय में हमारा भारतीय समाज प्रत्येक क्षेत्र में जितनी उन्नति कर रहा है, वह मात्र भौतिक और आर्थिक रूप में ही उन्नति हो रहा है। नैतिक पक्ष में निरन्तर पतन हो रहा है। आज मैं आप सब पाठकों का एक प्रमुख समाजिक समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ और वह समस्या है हमारे परिवारों में वृद्ध और बुजुर्गों का अकेलापन और उनमें पनपती उपेक्षा की भावना। किसी ने सच ही कहा है कि माँ-बाप अपने चार या पाँच बच्चों को पाल सकते हैं लेकिन जब वहीं माँ-बाप बुजुर्ग हो जाते हैं तो एक संतान अपने दो माँ-बाप को नहीं पाल सकते। ऐसा क्यों? इसका प्रमुख कारण है हमारा स्वार्थ और भौतिकतावाद (Our self centeredness and materialistic attitude)।

माना कि श्री जम्भेश्वर भगवान ने भी कहा है कि-

“मौरे छाया ना माया लोहि ना मांसू
रंगत न धात् मोरे माई ना बापूं
आपेणि आपूं रूहि न रापूं।”

मैं नहीं ये गुरु जी ने अपने स्वयं के बारे में बताया था। उपर्युक्त सबदवाणी में ‘मैं’ को ब्रह्म कहा गया है,

अनेक प्रकार से परमतत्त्व का स्वरूप बताया गया है न कि इंसान का स्वार्थ रूप।

इस समस्या के समाधान हेतु आवश्यकता है नैतिक शिक्षा और अच्छे संस्कार की जो एक बालक अपने घर से ही सीखता है। इस संदर्भ में मैं एक छोटी सी कथा की चर्चा करना चाहूँगी, जिसमें एक बेटा अपने वृद्ध पिता को घोड़ों के अस्तबल में रखते हुए ओढ़ने के लिए फटा हुआ कम्बल देने जाता है, तो उसका छोटा पुत्र अपने पिता से कम्बल लेकर उसके दो टुकड़े कर देता है। एक अपने पास रख लेता है, दूसरा टुकड़ा अपने पिता को दादाजी को देने के लिए कहता है तो पिता पूछता है कि तुमने वो एक टुकड़ा अपने पास क्यों रखा। छोटा बच्चा जवाब देता है कि जब आप वृद्ध होगे तो मैं यह कम्बल आपको ओढ़ने के लिए दूँगा।

हमें अपनी नैतिक जिम्मेदारी सोचते हुए वृद्ध और बड़ों को आदर, सत्कार देकर उनकी उम्र की इस संध्या और इस पड़ाव को आनन्दमय बनाना चाहिए।

-ज्योति बिश्नोई

केंद्रीय विद्यालय क्र. 2, जयपुर (राज.)

Matrimonial

Name: SURBHI BISHNOI
Date & Place of Birth: 27th February 1990, New Delhi
Complexion: Beautiful; **Height:** 5'-5.5"
Education: Pursuing Master in Social Work (Counseling) Bachelor of Science (Holistic, Health & Science), Perused 2 years course in Home Management from South Delhi Polytechnic for women from 2008 to 2010, Perused 3 years course in Holistic, Health and Fitness from South Delhi Polytechnic for women from 2010 to 2013, Completed NPTT / ECCE from Satyam International Polytechnic, New Delhi

Family

Father: Anil Bishnoi, Ex. Government Service (Indian Railways)
Current engagement: Senior Executive (S&T), RVNL, New Delhi
Contact Number: 09818126258
Mother: Rekha Bishnoi
Occupation: Government Service, Gazetted, (Ministry of Defense)
Brother elder: Ravi Bishnoi, working as Admin Manager for a Private Company in Gurgaon (Unmarried)



सामाजिक हलचल

मुक्ति धाम मुकाम में जाम्भाणी संस्कार शिविर आयोजित

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल मुकाम के सहयोग से जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा आयोजित जाम्भाणी संस्कार शिविर 11/06/2016 को मुकाम स्थित सेवक दल हाल में सम्पन्न हुआ। जिसमें राजस्थान, पंजाब व हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए 300 से ज्यादा विद्यार्थियों ने भाग लिया। अकादमी के इस चौथे संस्कार शिविर के आयोजन में भी संयोजक स्वामी सच्चिदानन्द जी, लालासर साथरी का विशेष योगदान रहा। बच्चों के रहने के लिए आवासीय व्यवस्था पंजाब हंसा माता सदन व समीप की कुछ अन्य धर्मशालाओं में की गई। 05 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रातः पंजीकरण उपरान्त शिविर उद्घाटन समारोह में स्वामी सच्चिदानन्द जी के अतिरिक्त मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी, आचार्य स्वामी रामकृष्ण जी, अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, गोशाला अध्यक्ष श्री सुल्तान धारणियां, मुकाम सरपंच श्री रविन्द्र गोदारा, श्री बी.आर. डेलू RAS, श्री संदीप धारणियां, श्री ओम प्रकाश सहारण भिरडाणा, श्री इन्द्राज जांगू आदि उपस्थित थे। डॉ. मनीराम सहारण, सिरसा ने मंच संचालन किया। सभी वक्ताओं ने पवित्र धाम पर आयोजित इस शिविर में विद्यार्थियों को भरपूर लाभ उठाने का आह्वान किया तथा उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

सप्ताह भर चले इस शिविर में छात्र सुबह से शाम तक अति व्यस्त रहे। नित्य क्रिया स्नान आदि से निवृत्त होकर प्रातः 05 से 06 बजे तक योग प्रशिक्षक श्री इंद्राज जांगू के दिशा निर्देशन में योग-प्राणायाम व सूक्ष्म व्यायाम का कार्यक्रम करते थे। सवेरे व सायं 06 से 07 बजे मुकाम निज मन्दिर में हवन यज्ञ में आहुती डालते तथा रात्रि भोजन उपरान्त 08 से 09 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन रहता था। विभिन्न विषयों पर व्याख्यान के लिए दोपहर भोजन से पहले तीन व भोजन

उपरान्त दो स्तर होते थे। जिसमें छात्रों को श्री गुरु जम्भेश्वर जीवनी, 29 धर्म नियमों, सबदवाणी, साखी भजन, हवन यज्ञ विधि, विद्यार्थी दिनचर्या, कैरियर अवसर, स्वास्थ्य नियम, सामान्य ज्ञान व जाम्भाणी संस्कारों से अवगत करवाया गया। विभिन्न वक्ताओं में स्वामी सच्चिदानन्द जी के अतिरिक्त सेवक दल प्रधान श्री रामसिंह कस्वां, अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, महासचिव डॉ. सुरेन्द्र खिचड़, उपाध्यक्ष, डॉ. बनवारी लाल सहू, अध्यापक श्री रंगलाल, श्री संदीप धारणियां, श्री इन्द्राज जांगू, स्वामी मोहनदास ऋषिकेश, श्री पृथ्वी सिंह धतरवाल, श्री शंकरलाल सिंवर, प्रधानाध्यापक श्री जयकिशन खिलेरी, कर्नल श्री गंगा राम धारणियां, कर्नल श्री सज्जन डेलू, श्री सुरेन्द्र सुन्दरम, श्री उदाराम खिलेरी, श्री बंसी लाल ढाका, संदप धारणियां, श्री अरविन्द गोदारा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तहसील कार्यवाहक श्री मुरारी लाल शर्मा आदि प्रमुख थे।

शिविर दौरान छात्रों के लिए लेखन कला, चित्र कला, वाद-विवाद, भाषण व गायन आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। जिनमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिता, आयोजित करने व व्याख्यानों के समायोजन में डॉ. मनीराम सहारण ने अहम भूमिका निभाई। 10 जून को प्रातः बच्चे समराथल धीरे पहुंचे तथा उस दिन वही हवन यज्ञ में भाग लिया। 10 जून को ही सायं संध्या सांस्कृतिक कार्यक्रम में जागरण व कविता पाठ का आयोजन हुआ।

स्वामी सच्चिदानन्द जी ने साखी भजनों के माध्यम से वातावरण को आध्यात्मिक बनाये रखा। कविता मंच पर पूर्व राज्य मंत्री राजस्थान श्री जोगेश्वर गर्ग ने अध्यक्षता की। अन्य कवियों में डॉ. कृष्णलाल, श्री बंसीलाल ढाका व श्री उदाराम खिलेरी विशेष थे। अन्तिम दिन बच्चों ने सात दिनों में दी गई शिक्षा से सम्बन्धित लिखित प्रश्नोत्तरी परीक्षा में भाग लिया।



समापन सत्र को सम्बोधित करते श्री देवेन्द्र भादू, मंचासीन स्वामी रामानन्द आचार्य, स्वामी सच्चिदानन्द आचार्य, डॉ. सरस्वती बिश्नोई व श्री प्रेमसुख डेलू IPS तथा शिविर में उपस्थित प्रतिभागी

प्रतियोगिताओं में अक्वल स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को 11 जून के समापन समारोह में पुरस्कृत किया गया। शिविर काल में विभिन्न स्थानों से पहुंचे अकादमी सदस्यों व कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग दिया। श्री विष्णु थापन, श्री मोती राम कालीराणा, श्री मोहन खिलेरी, पूर्व शिविरार्थी श्री धर्म तरङ्ग, श्री मनदीप गोदारा आदि का विशेष योगदान रहा।

समापन समारोह में स्वामी सच्चिदानन्द, मुकाम पीठाधीश्वर, स्वामी रामानन्द, महन्त सोहनदास के अतिरिक्त अकादमी संरक्षक डॉ. सरस्वती बिश्नोई, उपाध्यक्ष डॉ. बनवारी लाल सहू, डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई व अन्य पदाधिकारी तथा सदस्यगण उपस्थित थे। महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार खिचड़ सभी पधारे महानुभावों का स्वागत किया व मंच संचालन का काम संभाला। उपस्थित अतिथिजनों/महानुभावों में सेवक दल प्रधान रामसिंह कस्वां, हाल ही में सिविल सेवा में चयनित श्री प्रेमसुख डेलू, श्री राजा राम धारणियां, श्री देवेन्द्र भादू RPS, कर्नल सज्जन डेलू आदि विशेष थे। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने शिविर उपलब्धियों का उल्लेख किया तथा अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. बनवारी लाल सहू ने सभी पधारे सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया।

समापन समारोह के अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिये गये। प्रशस्ति-पत्र पाकर सम्मानित होने वाले छात्रों में लक्ष्मण सिगड़ नागौर, प्रमोद माल धांगड़ व कैलाश भादू धांगड़ ने लिखित प्रतियोगिता परीक्षा में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त

किया था। सर्वाधिक प्रतियोगिताओं में अक्वल स्थान पाने स्वरूप उज्ज्वल डूडी सिरसा सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी रहा। लेखन कला में अनुज बैनीवाल आदमपुर, शुभम काकड़ धांगड़ व रामदीन भादू जोधपुर ने वरिष्ठ वर्ग में तथा कुलदीप डेलू नोखा ने कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि चित्रकला में उज्ज्वल डूडी, वाद-विवाद में शुभम कड़वासरा व उज्ज्वल डूडी की टीम ने, गायन कला में रजनीश बैनीवाल नागौर, भाषण प्रतियोगिता में लक्ष्मण सिगड़ व भीमसेन पूनियां घमण्डिया तथा लिखित परीक्षा में लक्ष्मण सिगड़ व रमेश सियाग खाजूवाला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्य सम्मानित होने वाले छात्रों में भोमेश सियाग, भगवाना राम डूडी, समीर सहारण, रोहित डेलू, अमनदीप ढाका, मनोहर भादू, मोहित ऐचरा, दीपक भादू, हरिओम बैनीवाल, चन्द्र प्रकाश सियाग, सोमाराम खिलेरी, झवर लाल डेलू, पवन कुमार सुथार, कुश बैनीवाल, श्रवण मांझू, उमेश कड़वासरा, कुलदीप बैनीवाल, विकास तेतरवाल, हरिराम डेलू, संदीप, हरिकमल सिया, राकेश खिलेरी आदि प्रमुख थे। सभी वक्ताओं ने शिविर में भाग लेने वाले छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रसाद ग्रहण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ। दोपहर बाद अकादमी कार्यकारिणी की विशेष बैठक भी हुई जिसमें भविष्य के कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की गई।

—डॉ. मनीराम सहारण
सिरसा

गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित

गत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 जून, 2016 को गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित कर पर्यावरण के प्रति जागरूकता का सन्देश दिया। इस सम्मेलन की पूर्व रात्रि में स्वामी कृष्णानंद जी आचार्य, ऋषिकेश के सान्निध्य में जोधपुर से आई गायक मण्डली द्वारा भव्य जागरण का आयोजन किया गया। जागरण में हरे वृक्षों के लिए प्राण देने वाले शहीदों से संबंधित साखियों का विशेष रूप से गायन किया गया व गुरु जम्भेश्वर भगवान की पर्यावरण से संबंधित शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया।

5 जून को प्रातः गुरु जम्भेश्वर भगवान की पवित्र वाणी के सस्वर उच्चारण के साथ विशाल यज्ञ किया गया। तत्पश्चात पर्यावरण सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन दिल्ली के प्रधान श्री हनुमान सिंह बिश्नोई ने सभी अतिथियों व पर्यावरण प्रेमियों का स्वागत करते हुए पर्यावरण दिवस की महता

डाला। श्री अरुण जौहर पंचकूला ने पर्यावरण के क्षेत्र में चौधरी भजनलाल जी के योगदान का स्मरण किया व वर्तमान में पर्यावरण मंत्रालय द्वारा खेजडली शहीदों की स्मृति में किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप मांझू ने पर्यावरण की वर्तमान स्थिति व गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। नवचयनित IPS श्री प्रेमसुख डेलू ने युवाओं से पर्यावरण व कैरियर के प्रति जागरूक होने का आह्वान किया। डीसीपी श्री अशोक बिश्नोई ने संस्थान भवन में विद्यार्थियों को सुविधाएँ प्रदान करने की मांग की। श्री खम्मू राम खिचड़ ने पर्यावरण को लेकर धरातल पर कार्य करने की सलाह दी। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि श्री हीरालाल बिश्नोई, पूर्व विधायक सांचौर ने कहा कि प्रदूषण के लिए मनुष्य ही जिम्मेवार है। अब हमारी ही जिम्मेवारी है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें। विशिष्ट



सम्मेलन को सम्बोधित करते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई व उपस्थित पर्यावरण प्रेमी

पर प्रकाश डाला। श्री मनोहरलाल कड़वासरा व श्री ओ. पी. सुधाकर ने पर्यावरण व खेजडली खडाने से जुड़ी कविताएँ प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। श्रीमती संध्या बिश्नोई द्वारा तैयार करवाई गई 'पेड़ों का महत्व' लघु नाटिका का प्रदर्शन नन्हें-मुन्ने बच्चों द्वारा किया गया।

सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए श्री राम सिंह कस्वां प्रधान अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल ने सामाजिक प्रदूषण पर चिन्ता प्रकट की। श्री प्रदीप बिश्नोई मुरादाबाद ने पर्यावरण व मीडिया पर प्रकाश

अतिथि श्री दुड़राम, पूर्व संसदीय सचिव हरियाणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूरा विश्व आज प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है, हमें हरे वृक्ष लगा कर उनकी रक्षा करनी चाहिये। जाम्भाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानंद आचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रकृति से छेड़छाड़ घातक हो सकती है, इसलिए मनुष्य को प्रकृति से मेलजोल रखना चाहिये तभी पर्यावरण बच सकता है।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हीरालाल भंवाल एडवोकेट, अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने

अपने उद्बोधन में कहा कि आज मनुष्य केवल भौतिक उन्नति के उपाय कर रहा है तथा अधिकाधिक सुविधा चाहता है, इसी का दुष्परिणाम है कि वह विषाक्त वातावरण में जीने को मजबूर है। यदि मनुष्य संयमित जीवन जीना प्रारम्भ कर दे तो इस समस्या का समाधान हो सकता है। सम्मेलन के मुख्यातिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने अपने उद्बोधन में पर्यावरण दिवस के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्व आज जिस प्रदूषण की समस्या को लेकर चिंतित है उसे गुरु जम्भेश्वर भगवान ने 500 वर्ष पहले ही भांप लिया था और हरे वृक्षों की रक्षा का संदेश दिया था। यदि विश्व गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं का अनुसरण करता तो आज यह स्थिति नहीं होती। आपने कहा कि बिश्नोई समाज विश्व का एकमात्र ऐसा समाज है जिसने अनेकों बार हरे वृक्षों के लिए बलिदान दिया है। आपने अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान भी किया। कार्यक्रम का मंच संचालन अमर

ज्योति के संपादक डॉ सुरेन्द्र बिश्नोई ने किया। इस सम्मेलन में महासभा के महासचिव श्री विनोद धारणिया, कोषाध्यक्ष श्री रामस्वरूप धारणिया, उपाध्यक्ष श्री हुक्मा राम खिचड़, कार्यकारिणी सदस्य श्री राजाराम धारणिया, सेवक दल के महासचिव श्री अजमेर गोदारा, बिश्नोई सभा हिसार के संयुक्त सचिव डॉ. मदन खिचड़, बिश्नोई सभा, डबवाली के सचिव श्री इन्द्रजीत धारणिया, संस्थान भवन के उपाध्यक्ष श्री मालाराम सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री खम्मूराम जी द्वारा पर्यावरण प्रदर्शनी भी लगाई गई। सम्मेलन के पश्चात् पर्यावरण प्रेमी श्री खम्मूराम जी, जयकिशन जी खिलेरी, दयाराम बिश्नोई, प्रतीक गोदारा, महेश धायल के नेतृत्व में पर्यावरण प्रेमियों ने जंतर-मंतर पर रैली का आयोजन कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

-प्रमोद ऐचरा

व्यवस्थापक, अमर ज्योति

अब अमर ज्योति में हर माह दे सकेंगे विज्ञापन

समाज सेवी उद्यमी एवं व्यवसायी बन्धुओं के लिए हर्ष की बात है कि अब आपकी चहेती पत्रिका 'अमर ज्योति' में प्रत्येक माह दो पृष्ठ (कवर पृष्ठ संख्या तीन व चार) विज्ञापन के प्रकाशित होंगे। इन पृष्ठों पर विज्ञापन की दर इस प्रकार रहेगी -

कवर पृष्ठ संख्या तीन		कवर पृष्ठ संख्या चार	
पूरा पृष्ठ	रु. 10,000	पूरा पृष्ठ	रु. 15,000
आधा पृष्ठ	रु. 6000	आधा पृष्ठ	रु. 10,000
एक चौथाई	रु. 3500	एक चौथाई	रु. 6000

विज्ञापन देने के लिए अमर ज्योति कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र - 01662-225804, 8059027929, ई-मेल : editor@amarjyotipatrika.com

प्रिय पाठकों जैसा कि आपको विदित ही है कि गत कुछ वर्षों में महंगाई में बेतहाशा वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव कागज व प्रिंटिंग पर भी पड़ा है, इसलिए हमें न चाहते हुए भी 'अमर ज्योति' के मूल्य में अल्प वृद्धि करनी पड़ रही है। अब अमर ज्योति का वार्षिक मूल्य 100 रुपये व आजीवन मूल्य 1000 रुपये होगा। आशा है आप इसे अन्यथा नहीं लेंगे और आपका सहयोग पूर्ववत् बना रहेगा। पाठकों व लेखकों की मांग को ध्यान में रखते हुए अमर ज्योति के पृष्ठ 32 से बढ़ाकर 40 कर दिए गए हैं।

- प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार

सिरसा में 7 दिवसीय संस्कार व चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

सिरसा: बिश्नोई सभा सिरसा द्वारा 13 से 19 वर्ष की छात्राओं के लिए बिश्नोई धर्मशाला, सिरसा में 17 से 23 जून तक आयोजित 7 दिवसीय जाम्भाणी संस्कार एवं चरित्र निर्माण शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस शिविर का उद्घाटन सिरसा के जिला वाणिज्य एवं कर आयुक्त इंद्र सिंह गोदारा ने किया। उद्घाटन सत्र में जीव रक्षा सभा, हरियाणा के अध्यक्ष कामरेड रामेश्वर डेलू; जाम्भाणी साहित्य अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार; बिश्नोई सभा, डबवाली के सचिव इंद्रजीत धारणियां; योग शिक्षक इंद्रराज जांगू, भिरडाना से प्रिंसीपल ओ.पी. सहारण ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। इस सभा में बिश्नोई सभा, सिरसा के सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने सभी का धन्यवाद किया व डॉ. मनीराम सहारण ने मंच संचालन किया।



शिविर के समापन सत्र का शुभारम्भ करते स्वामी सोहनदासजी, मुख्य अतिथि श्री प्रदीप बैनीवाल, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार; महासभा सचिव श्री सोमप्रकाश एडवोकेट, श्री खेमचन्द बैनीवाल, श्री ओ.पी. बिश्नोई व अन्य अतिथिगण।

शिविर में सिरसा के अतिरिक्त हिसार व फतेहाबाद जिला सहित निकटवर्ती पंजाब व राजस्थान की लड़कियों ने भाग लिया। 7 दिवसीय इस शिविर में नजदीक व दूर से पधारे समाज के संतजनों, गायणाचार्यों एवं विद्वानजनों ने लड़कियों को श्री गुरु जम्भेश्वर जी के जीवन-चरित्र, 29 धर्म-नियमों, सबदवाणी, साखी- भजन साहित्य, बिश्नोई गौरव-गाथा, विद्यार्थी दिनचर्या, सामान्य ज्ञान, योग, प्राणायाम, हवन-यज्ञ विधि, कैरियर अवसरों व जाम्भाणी संस्कारों से अवगत करवाया व उनका मार्गदर्शन किया। इसके अतिरिक्त मुक्तिधाम से पधारे महन्त सोहनदास जी,

बीकानेर से डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई, हिम्मतपुरा (पंजाब) से विनोद जम्भदास कड़वासरा, गंगानगर से हंसराज थोरी, रावतसर से मास्टर रंगलाल, मलोट से अरविंद गोदारा, जगदीश बैनीवाल, इंद्राज जांगू, सुनेश बिश्नोई, पृथ्वी सिंह धतरवाल, इंद्रजीत धारणियां, पृथ्वी सिंह बैनीवाल, सुग्रीव कड़वासरा व शिक्षा विभाग से अनिता देवी ने भी बच्चों को सम्बोधित किया। शिविर के विभिन्न सत्रों में डॉ. मनीराम सहारण ने संयोजक का काम किया। व्यवस्था संभालने में सभा सचिव ओ.पी. बिश्नोई की विशेष भूमिका रही। समापन समारोह में बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान प्रदीप बैनीवाल ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की, जबकि समारोह की अध्यक्षता सिरसा सभा के प्रधान खेमचंद बैनीवाल ने की। शिविर में बिश्नोई सभा, हिसार ने पचास हजार रुपये का योगदान दिया।

इस अवसर पर महासभा के सचिव सोमप्रकाश, महासभा जिलाध्यक्ष रिछपाल बैनीवाल, सचिव ओ.पी. बिश्नोई, कोषाध्यक्ष राजकुमार बैनीवाल, सहसचिव जगतपाल कड़वासरा, भूप सिंह कस्वां तथा कार्यकारिणी सदस्यों के अतिरिक्त सेवक दल जिला प्रधान कृष्ण सिगड़, लार्ड शिवा संस्थान से देशकमल व लड़कियों के अभिभावक उपस्थित थे। शिविर में विभिन्न प्रतियोगिताओं में अब्बल आने वाली छात्राओं को भी सम्मानित किया गया तथा बिश्नपुरा (पंजाब) से कुमारी बिश्नोई गायत्री को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। अन्य सम्मानित छात्राओं में रवीना रानी धारणियां, साक्षी कड़वासरा, अंजु बैनीवाल, आरती भादू, युविका भादू, नेहा पूनिया, स्वाति गोदारा, शिक्षा बैनीवाल, अंजलि ज्याणी, वर्षा लाम्बा, एकता भादू, आरती कालीराणा व हर्षिता बैनीवाल प्रमुख थी। इस अवसर पर कार्यकारिणी सदस्य कृष्णपाल बैनीवाल, हनुमान सिहाग, रूलीराम गोदारा, सूआराम कड़वासरा, सुशील बैनीवाल, अमर सिंह पूनिया, जगदीश खदाब, पवन कड़वासरा, पृथ्वी सिंह गोदारा सहित अनेक गणयमान्य लोग उपस्थित थे।

-ओ.पी. बिश्नोई
सचिव, बिश्नोई सभा, सिरसा

खेजड़ली शहीदों की स्मृति में पंजाब में बनेगा नेचर पार्क

पंजाब : 19 मई 2016, वीरवार को शहीद हजारीलाल मांझू की 26वीं पुण्यतिथि पर मेहराणा धोरा उनकी प्रतिमा पर श्रद्धांजलि समारोह रखा। समारोह की अध्यक्षता कुलदीप पुनिया अध्यक्ष, जीव रक्षा बिश्नोई शहीद स्मारक समिति ने की। इस मौके पर पंजाब बिश्नोई सभा के प्रधान गंगा विशान जी भादू व श्रवण सिहाग उपाध्यक्ष जीव रक्षा बिश्नोई शहीद स्मारक समिति, संजय डेलू प्रधान गऊ शाला सीतो गुना, रमेश कुमार जी राहड़, संयोजक अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा, राजीव गोदारा जिला मुक्तसर प्रधान, हवा सिंह पुनिया प्रधान पंजाब आरक्षण समिति, प्रेम बागड़ीया पंजाब बिश्नोई सभा सदस्य व कुलवंत बागड़ीया, जगदीश मांझू, सतपाल डेलू, निर्मल डेलू, महेन्द्र मांझू, गौरव धतरवाल, सुशील बोला, अश्वनी जी मेहराना, राजिन्द्र खीचड़ आदि सभी ने शहीद हजारी लाल मांझू (जो हिरनों की रक्षार्थ शिकारियों की गोली से शहीद हुए थे।)

इसके बाद जीव रक्षा बिश्नोई शहीद स्मारक समिति के अध्यक्ष के नेतृत्व में एक मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें समिति के सभी पदाधिकारी शामिल थे। उसमें पंजाब सरकार के द्वारा शहीद हजारी लाल मांझू के स्मृति द्वार के निर्माण के लिए चर्चा की गई व शहीदों के लिए शहीदी स्तंभ बनाने हेतु चर्चा की गई तथा इसमें फैसला लिया गया कि गांव सीतो गुन्नो में 21 मई, 2016 को सरदार प्रकाश सिंह बादल मुख्यमंत्री पंजाब के पधारने पर शहीद हजारी लाल मांझू के गेट निर्माण हेतु 4 लाख रुपये देने पर उनको सम्मानित करना है और उनको नया मांग पत्र देना है। मांग-पत्र में 363 बिश्नोई शहीदों के लिए स्मारक बनाने, पंजाब सरकार की तरफ से शहीद माता अमृता देवी पर्यावरण पुरस्कार प्रारम्भ करने व पूर्व में घोषित पटियाला विश्वविद्यालय में गुरु जम्भेश्वर शोध पीठ की स्थापना करने तथा शहीदों की जीवनी स्कूलों के पाठ्यक्रम में लगाने की मांग की गई।

मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को 21 मई को गांव सीतो गुन्नो में सरपंच के निवास पर जीव रक्षा बिश्नोई शहीदी स्मारक समिति के अध्यक्ष कुलदीप पुनिया के नेतृत्व में बिश्नोई समाज का एक शिष्ट मण्डल मिला एवं मांग-पत्र सौंपा। पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल ने इस मांग का संज्ञान लेते हुए खेजड़ली शहीदों की याद में सीतो गुन्नो के पास पांच एकड़ में नेचर पार्क बनाने की घोषणा की है। लगभग दो करोड़ की लागत से बनने वाले इस पार्क में



पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल को मांग पत्र सौंपते बिश्नोईजन।



पंजाब मुख्यमंत्री को सम्मानित करते पूर्व विधायक श्री सहौराम धारणीया, स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री कुलदीप पुनिया व अन्य।



पंजाब मुख्यमंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल को सम्मानित करते अ.भा.बि.जीव रक्षा सभा के पदाधिकारी श्री साहबराम रोज, श्री रमेश राहड़, ठेकेदार सुखराम बोला, शिवराज जाखड़, श्रीराम सहू व आर.डी. बिश्नोई।

363 शहीदों की याद में 363 खेजड़ी के वृक्ष लगाए जाएंगे। 363 शहीदों की याद में 363 इंच ऊंचा स्मारक भी बनाया जाएगा तथा उस पर शहीदों के नाम अंकित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री की इस घोषणा का बिश्नोई समाज व शहीद स्मारक समिति तथा अखिल भारतीय बिश्नोई जीव रक्षा सभा समेत अनेक संस्थाओं ने स्वागत किया है व व्यक्तिगत रूप से जाकर मुख्यमंत्री का धन्यवाद किया है।

अमर ज्योति पत्रिका का एंड्रॉयड एप जारी



हिसार : बिश्नोई समाज के मुखपत्र और आपकी चहेती पत्रिका 'अमर ज्योति' का एंड्रॉयड एप तैयार किया गया है। इस एप को 03 जून, 2016 को बिश्नोई मंदिर, हिसार में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप बिश्नोई द्वारा लॉन्च किया गया। यह एप निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसे डाउनलोड करने के लिये प्ले स्टोर में जाकर Amar Jyoti Patrika के नाम से सर्च करें। इस एप में नए अंक के साथ-साथ कम से कम एक वर्ष के पुराने अंक भी उपलब्ध रहेंगे। अमर ज्योति के विशेष अनुरोध पर श्री सुरेन्द्र जी धारणियां, जयपुर द्वारा यह एप निःशुल्क तैयार किया गया है। श्री धारणियां जी का 'अमर ज्योति' परिवार की ओर से बहुत आभार। एप डाउनलोड करने के लिये क्लिक करें-

[djsahttps://play.google.com/store/apps/details?id=com-app_amarjyoti-layout.hl=en](https://play.google.com/store/apps/details?id=com-app_amarjyoti-layout.hl=en)

जाम्भाणी ज्ञान परीक्षा 2016 का पंजीकरण प्रारम्भ

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा जाम्भाणी ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इस बार यह परीक्षा नौवीं से बारहवीं कक्षा तक अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए होगी। इस परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी 15 जुलाई से 15 अगस्त तक अपना पंजीकरण करवा सकते हैं। परीक्षा की नियमावली, पाठ्यक्रम, जिला व तहसील प्रभारियों की सूची तथा अन्य आवश्यक जानकारी अकादमी की वेबसाइट www.jambhani.com पर उपलब्ध है।

-डॉ. बनवारी लाल सहू
परीक्षा संयोजक

चौ. भजनलाल जी की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर आयोजित

03 जून 2016 को हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भजनलाल जी की पांचवी पुण्यतिथि पर बिश्नोई सभा, हिसार व गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति की ओर से बिश्नोई मंदिर हिसार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर में 100 से अधिक रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। इस शिविर का उद्घाटन अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई ने किया। इस अवसर पर कुलदीप बिश्नोई ने रक्तदाताओं को प्रेरित करते हुए कहा कि चौ. भजनलाल जी का संपूर्ण जीवन दूसरों की भलाई को समर्पित था। वे दूसरों का दुःख दूर करना ही अपना कर्तव्य समझते थे। रक्तदान का अभिप्राय जीवनदान है, इससे बड़ा दान और परोपकार और कोई नहीं हो सकता। बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान प्रदीप बैनीवाल ने इस अवसर पर कहा कि चौ. भजनलाल जी आम आदमी के हितैषी और गरीबों के मसीहा थे। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के पूरे समाज का कल्याण किया था। गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान जगदीश कड़वासरा ने रक्तदाताओं का धन्यवाद किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्रीमती जसमां देवी, पूर्व संसदीय सचिव दुड़ाराम, वरिष्ठ राजनेता कमलसिंह, रणधीर पनिहार, सूबे सिंह आर्य, हिसार सभा के पूर्व प्रधान सुभाष देहड़ू, हिसार सभा के उपप्रधान पटेल सिंह पूनिया, चौथाराम जाणी, सचिव डॉ. सुरेंद्र कुमार, कोषाध्यक्ष अनिल पूनियां, संयुक्त सचिव डॉ. मदन खिचड़, कार्यकारिणी सदस्य रामकुमार भादू एडवाकेट, रायसाहब डेलू एडवोकेट, रविंद्र खदाव, हनुमान खिचड़, श्रवण सहारण सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्रीमती अनिला बिश्नोई सह-संपादिका नियुक्त



हिन्दी भाषा व साहित्य की विदुषी श्रीमती अनिला बिश्नोई धर्मपत्नी डॉ. ओ.पी. बिश्नोई निवासी हिसार को अमर ज्योति पत्रिका की सह-सम्पादिका नियुक्त किया गया है। आपका जन्म गाडरवाड़ा, मध्यप्रदेश में पटेल अयोध्या प्रसाद बिश्नोई के घर हुआ था। आपने सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. व आन्ध्रा विश्वविद्यालय से एम.फिल् की है। आपका 25 वर्ष से भी अधिक समय तक हिन्दी पढ़ाने का अनुभव है। आशा है आपके ज्ञान व अनुभव से पाठक लाभान्वित होंगे।

-सम्पादक

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम



पीपासर



सम्भराथल



जाम्भोलाव



जांगलू



रोट्ट



लोदीपुर



मुकाम



लालासर



विल्हेश्वर धाम रामड़ावास

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2073 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी : 03.07.2016, रविवार, सायं 6.52 बजे
उतरेगी : 04.07.2016, सोमवार, सायं 4.30 बजे

विक्रमी सम्वत् 2073 श्रावण की अमावस्या

लगेगी : 01.08.2016, सोमवार, रात्रि 3.14 बजे
उतरेगी : 02.08.2016, मंगलवार, रात्रि 2.14 बजे

विक्रमी सम्वत् 2073 भाद्रपद की अमावस्या

लगेगी : 31.08.2016, बुधवार, दोपहर 2.03 बजे
उतरेगी : 01.09.2016, गुरुवार, दोपहर 2.33 बजे

जन्माष्टमी मेला

हिसार, पीपासर, मेहराणा धोरा, डबवाली, कांठ : 25 अगस्त, 2016

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा**. (जैसलां वाले) मो.: 09416407290

उनतीस धर्म नियम

- ❖ तीस दिन सूतक रखना।
- ❖ पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- ❖ प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- ❖ शील का पालन करना व संतोष रखना।
- ❖ बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- ❖ द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- ❖ संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- ❖ निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- ❖ पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- ❖ वाणी विचार कर बोलना।
- ❖ क्षमा-दया धारण करना।
- ❖ चोरी नहीं करनी।
- ❖ निन्दा नहीं करनी।
- ❖ झूठ नहीं बोलना।
- ❖ वाद-विवाद का त्याग करना।
- ❖ अमावस्या का व्रत रखना।
- ❖ विष्णु का भजन करना।
- ❖ जीव दया पालणी।
- ❖ हरा वृक्ष नहीं काटना।
- ❖ काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- ❖ रसोई अपने हाथ से बनानी।
- ❖ थाट अमर रखना।
- ❖ बैल बधिया नहीं कराना।
- ❖ अमल नहीं खाना।
- ❖ तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- ❖ भांग नहीं पीना।
- ❖ मद्यपान नहीं करना।
- ❖ मांस नहीं खाना।
- ❖ नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

श्री हरि

शुद्ध सरसों का तेल

कच्ची घानी



पकवानों के लिए अति स्वादिष्ट



Neeraj (Mob.: 9215700021)



नीरज काँटन फैक्ट्री
मण्डी आदमपुर (हरियाणा)

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जुलाई, 2016 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117